

Manuscript

पौलुस और फिलिप्पयों

पौलुस की कारागृह से लिखी पत्रियाँ

अध्याय 5

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्‍त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

**संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।**

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकार्इ के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

[परिचय 1](#_Toc80709656)

[पृष्ठभूमि 1](#_Toc80709657)

[संबंध 2](#_Toc80709658)

[कारागृह में कष्ट 3](#_Toc80709659)

[फिलिप्पी की परिस्थितियां 6](#_Toc80709660)

[पौलुस के लिए चिंता 6](#_Toc80709661)

[कलीसिया के लिए समस्याएं 7](#_Toc80709662)

[संरचना एवं विषयवस्तु 9](#_Toc80709663)

[अभिवादन 9](#_Toc80709664)

[आभार-प्रदर्शन 10](#_Toc80709665)

[प्रार्थना 10](#_Toc80709666)

[मुख्य भाग 11](#_Toc80709667)

[पौलुस की दृढ़ता 11](#_Toc80709668)

[दृढ़ बने रहने के उपदेश 12](#_Toc80709669)

[दृढ़ता की पुष्टि 16](#_Toc80709670)

[अंतिम अभिनंदन 17](#_Toc80709671)

[आधुनिक प्रयोग 17](#_Toc80709672)

[दृढ़ता की प्रकृति 18](#_Toc80709673)

[परिभाषा 18](#_Toc80709674)

[आवश्यकता 19](#_Toc80709675)

[आश्वासन 20](#_Toc80709676)

[दृढ़ता की विचारधारा 20](#_Toc80709677)

[नम्रता 20](#_Toc80709678)

[आशावाद 23](#_Toc80709679)

[आनन्द 24](#_Toc80709680)

[दृढ़ता की सेवकाई 25](#_Toc80709681)

[उपसंहार 26](#_Toc80709682)

परिचय

जब सैनिक युद्ध की अनिश्चितताओं का सामना करते हैं, तो उनके मन में मृत्यु के विचार प्राय: आते रहते हैं। वे ऐसे मार्गों की तलाश करते रहते हैं जिनके द्वारा वे स्वयं राहत प्राप्त कर सकें और अपने परिवार वालों को राहत प्रदान कर सकें। प्राय: वे आभार-प्रदर्शन और सलाह के पत्र लिखते हैं जिनमें वे अपने प्रियजनों को बहादुरी से जीने, और इस प्रकार से जीने को उत्साहित करते हैं जिनसे उन्हें सम्मान मिले।

001

कई रूपों में, फिलिप्पियों को लिखी पौलुस की पत्री भी उस पत्र के समान है जैसा एक सैनिक लिखता है जब उसे लगता हो कि किसी भी समय उसकी मृत्यु हो सकती है। पौलुस ने फिलिप्पियों को ऐसे समय में लिखा जब वह बहुत कष्ट सह रहा था, ऐसे समय में जब वह सोच रहा था जल्दी ही उसे शायद मार डाला जाएगा। और उसने उन लोगों को लिखा जिनसे वह प्रेम करता था। और इसलिए, फिलिप्पी में रहने वाले मसीहियों को लिखे उसके शब्द गंभीर परन्तु प्रेमपूर्ण; दुःखद परन्तु सांत्वना देने वाले, प्रशंसात्मक परन्तु कड़वी सच्चाई थे। पौलुस के दृष्टिकोण से वे शायद उसके विश्वासयोग्य मित्रों के प्रति सलाह और हार्दिक आभार के अंतिम शब्द हो सकते थे।

002

यह हमारी श्रृंखला- पौलुस की कारागृह से लिखी पत्रियों का पांचवा अध्याय है। और हमने इस अध्याय का शीर्षक दिया है- पौलुस और फिलिप्पियों, क्योंकि हम फिलिप्पी की कलीसिया को लिखी पौलुस की पत्री का परीक्षण करेंगे। इस पत्री में, पौलुस ने फिलिप्पियों को उत्साहित करने के लिए लिखा जो उसके द्वारा सहे जा रहे कष्टों से चंतित थे। अपनी मृत्यु की शीघ्र संभावना के पूर्वानुमान के साथ पौलुस ने स्वयं और फिलिप्पियों द्वारा सहे जाने वाले सताव और तनाव के समयों के लिए आशा और उत्साह से भरी एक पत्री लिखी।

003

हम पौलुस और फिलिप्पियों के अपने अध्ययन को तीन भागों में विभाजित करेंगे। पहला, हम फिलिप्पियों को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि का सर्वेक्षण करेंगे। दूसरा, हम फिलिप्पियों की संरचना और विषयवस्तु पर ध्यान देंगे। और तीसरा, हम इस पत्री के आधुनिक प्रयोग की जांच भी करेंगे। आइए, फिलिप्पियों को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि पर ध्यान देते हुए आरंभ करें।

004

पृष्ठभूमि

जिस प्रकार हमने इस पूरी श्रृंखला में कहा है, यह सदैव महत्वपूर्ण है कि हम पौलुस और जिनको उसने अपनी पत्रियां लिखीं उनकी परिस्थितियों को जान लें। इन विवरणों को जानना हमें पौलुस के संदेश पर आधारित रहने और इसे उस प्रकार ग्रहण करने में सहायता करता है जैसे पौलुस प्रदान करना चाहता था।

005

अत: जब हम फिलिप्पियों को लिखी पौलुस की पत्री को देखते हैं, तो हमें ऐसे प्रश्न पूछने की आवश्यकता है- फिलिप्पियों के लोग कौन थे? उनके जीवनों में और पौलुस के जीवन में क्या हो रहा था? और पौलुस ने उनको पत्री क्यों लिखी? इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर इस पत्री में पौलुस की आधिकारिक शिक्षा को समझने और अपने जीवनों में उसे लागू करने में सहायता करेंगे।

006

जब हम फिलिप्पियों को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि की जांच करते हैं तो हम तीन विषयों पर अपने ध्यान को लगाएंगे। पहला, हम फिलिप्पियों के साथ पौलुस के संबंध पर चर्चा करेंगे। दूसरा, हम कारागृह में पौलुस के कष्टों के कुछ विवरणों का उल्लेख करेंगे। और तीसरा, हम पौलुस द्वारा फिलिप्पियों को पत्री लिखे जाने के समय की उनकी परिस्थितियों पर चर्चा करेंगे। आइए, पौलुस और फिलिप्पी की कलीसिया के बीच संबंध पर ध्यान देते हुए आरंभ करें।

007

संबंध

फिलिप्पी मकिदुनिया के रोमी प्रान्त का एक महत्वपूर्ण नगर था, वह स्थान जो अब आधुनिक यूनान में पाया जाता है। यह वाया एग्नैशिया के करीब पाया जाता है, वह मुख्य मार्ग जो रोम नगर को इसके राज्य के पूर्वी प्रान्तों से जोड़ता है। और इसमें रोम के साथ एक विशेष ओहदा पाया जाता था, जिससे उसके पास इटली में रोमी काँलोनी होने के समान अधिकार पाए जाते थे, और यह अपने नागरिकों को रोमी नागरिकता प्रदान करता था।

008

पौलुस ने अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान फिलिप्पी में कलीसिया की स्थापना की थी, लगभग 49 या 50 ईस्वी के दौरान। फिलिप्पी पहुंचने से पूर्व वह एशिया में सेवकाई कर रहा था। परन्तु तब उसने एक दर्शन देखा जिसमें एक व्यक्ति उससे मकिदुनिया में आकर सुसमाचार का प्रचार करने का आग्रह करता है। इस दर्शन के प्रत्युत्तर में पौलुस नियापुलिस में उतर कर मकिदुनिया गया, परन्तु शीघ्र ही फिलिप्पी नगर में चला गया जो नियापुलिस से लगभग 10 मील उत्तर-पश्चिम में था।

009

फिलिप्पी में पौलुस की अधिकांश गतिविधियों का प्रेरितों के काम 16:12-40 में वर्णन किया गया है। उदाहरण के तौर पर, यह फिलिप्पी में ही था कि पौलुस यूरोप में पहले व्यक्ति, व्यापारी स्त्री लुदिया, को विश्वास में लेकर आया। और फिलिप्पी में ही था कि उसे एक दासी लड़की से दुष्टात्मा निकालने के कारण कारागृह में डाला गया। यही वह स्थान था जहां एक जाने-माने दरोगा ने मसीह में विश्वास किया, क्योंकि वह अपने लिए पौलुस के रहम से बहुत ही द्रवित हो गया था।

010

फिलिप्पी में पौलुस की सेवकाई इतनी सफल थी कि जब वह नगर से गया तो फिलिप्पियों के मसीहियों ने पौलुस की आर्थिक आवश्यकताओं में समय-समय पर आर्थिक सहायता भेजकर उसकी सहायता की। फिलिप्पियों 4:15-16 को सुनें जहां पौलुस ने उनकी उदारता के बारे में लिखा :

011

जब मैं ने मकिदुनिया से कूच किया तब तुम्हें छोड़ और किसी मंडली ने लेने देने के विषय में मेरी सहायता नहीं की। इसी प्रकार जब मैं थिस्सलुनीके में था; तब भी तुम ने मेरी घटी पूरी करने के लिये एक बार क्या वरन दो बार कुछ भेजा था। (फिलिप्पियों 4:15-16)

012

फिलिप्पी की कलीसिया ने पौलुस से प्रेम किया, और उन्होंने आर्थिक भेंटों के द्वारा निरन्तर उसकी सहायता की। फिलिप्पियों 4:10 और 18 के अनुसार पौलुस द्वारा पत्री लिखने के समय के आस-पास ही फिलिप्पियों ने उसके लिए एक उपहार भेजा था। वहां पौलुस के शब्दों को सुनें :

013

अब इतने दिनों के बाद तुम्हारा विचार मेरे विषय में फिर जागृत हुआ है; निश्चय तुम्हें आरम्भ में भी इस का विचार था, पर तुम्हें अवसर न मिला। मेरे पास सब कुछ है, वरन बहुतायत से भी है: जो वस्तुएं तुम ने इपफ्रुदीतुस के हाथ से भेजी थीं उन्हें पाकर मैं तृप्त हो गया हूँ। (फिलिप्पियों 4:10-18)

014

यद्यपि फिलिप्पी में ऐसे कुछ विश्वासी थे जो आर्थिक रूप से संपन्न थे, परन्तु कलीसिया सामान्यत: बहुत ही गरीब थी, वे सदैव आर्थिक रूप से पौलुस की सहायता करने के योग्य नहीं थे। परन्तु जब उनके पास अवसर था तो उन्होंने उदारता से उसे दिया।

015

और जिस प्रकार फिलिप्पियों ने पौलुस से प्रेम किया, तो उसने भी उनके लिए असीम स्नेह का अनुभव किया। उसने प्रभु के प्रति उनके समर्पण, और सुसमाचार की सेवकाई में उनकी सहभागिता के लिए उनसे प्रेम किया। वे उसके घनिष्ठ मित्र थे, ऐसे लोग जिनकी संगति का उसने आनन्द लिया और जिनको उसने बहुत याद किया। सुनें किस प्रकार उसने फिलिप्पियों 1:4-8 में उनसे बात की :

016

और जब कभी तुम सब के लिये विनती करता हूँ, तो सदा आनन्द के साथ विनती करता हूँ। इसलिये, कि तुम पहिले दिन से लेकर आज तक सुसमाचार के फैलाने में मेरे सहभागी रहे हो... तुम मेरे मन में आ बसे हो... मैं मसीह यीशु की सी प्रीति करके तुम सब की लालसा करता हूँ। (फिलिप्पियों 1:4-8)

017

वास्तव में फिलिप्पियों 2:12 और 4:1 में पौलुस ने फिलिप्पियों को अपने “प्रिय मित्रों” के रूप में संबोधित किया, जिसमें उसने यूनानी शब्द अगापेटोस का प्रयोग किया। अगापेटोस वह शब्द है जिसका प्रयोग पौलुस ने अपने करीबी सहकर्मियों और प्रिय मित्रों जैसे तिखिकुस, इपफ्रास, फिलेमोन, उनेसिमुस और लूका का वर्णन करने के लिए किया था। फिलिप्पियों की कलीसिया के लिए पौलुस का प्रेम अन्य कलीसियाओं के लिए उसके प्रेम की अपेक्षा अधिक विशिष्ट प्रतीत होता है, और यह केवल संबंध होने या परिचितता में ही नहीं बल्कि उनकी निरन्तर जोशपूर्ण मित्रता में भी प्रकट हुआ।

018

और हमें इससे चकित नहीं होना चाहिए। आखिरकार, यह कल्पना करना कठिन नहीं है कि पौलुस और लुदिया, उसकी मेजबान या पौलुस और दरोगा, जिसके जीवन को उसने बचाया था, और शायद पौलुस और उस दासी लड़की, जिसे उसने दुष्टात्मा से छुड़ाया था, के बीच एक घनिष्ठ संबंध था। सब घटनाओं में पौलुस का फिलिप्पी के विश्वासियों के प्रति विश्वास काफी बढ़ गया था। और उनकी भी उसके प्रति ऐसी ही भावनाएं थीं।

019

अब जब हम पौलुस और फिलिप्पियों के बीच प्रेमपूर्ण और सहायक संबंध को देख चुके हैं, इसलिए अब हमें कारागृह में प्रेरित के कष्टों के विवरणों की ओर मुड़ना चाहिए। फिलिप्पियों को पत्री लिखने के समय पौलुस किन बातों का सामना कर रहा था?

020

कारागृह में कष्ट

अपनी लम्बी सेवकाई में पौलुस ने प्राय: बहुत कष्टों का सामना किया। उसे बार-बार कोड़े लगाए गए, डंडों से मारा गया, हत्या करने वालों के द्वारा उसका पीछा किया गया। कई बार उसे कारागृह में डाला गया, और एक बार उस पर पत्थरवाह किया गया और उसे मरने के लिए छोड़ दिया गया। बहुत बार वह दु:खी और निराश भी हुआ। उदाहरण के तौर पर, अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा के दौरान उसने 2 कुरिन्थियों 1:8 में ये शब्द लिखे :

021

हे भाइयो, हम नहीं चाहते कि तुम हमारे उस क्लेश से अनजान रहो, जो एशिया में हम पर पड़ा, कि ऐसे भारी बोझ से दब गए थे, जो हमारी सामर्थ से बाहर था, यहां तक कि हम जीवन से भी हाथ धो बैठे थे। (2कुरिन्थियों 1:8)

022

यहां पौलुस ने अपने द्वारा सही गईं भयानक परिस्थितियों के कारण पराजित होने की भावना, अर्थात् अस्थाई रूप से आशा खोने का वर्णन किया।

023

पौलुस जानता था कि जीवन वास्तव में आशारहित नहीं है, कि परमेश्वर हमें किसी भी विपत्ति से बचा सकता है। परन्तु वह भी एक मनुष्य था; दूसरों के समान उसमें भी कमजोरियां थीं। और सत्य यह है कि कभी-कभी परमेश्वर की सर्वोच्चता के बारे में जानना और उस पर विश्वास करना ही हमें निराशा से बचाने के लिए पर्याप्त नहीं होता। पौलुस ने भी संघर्ष किया। पौलुस भी हार मान लेना चाहता था। पौलुस ने भी तिरस्कृत महसूस किया था।

024

और जब हम फिलिप्पियों को लिखी उसकी पत्री के विवरणों को पढ़ते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि इस कलीसिया जिसे वह बहुत प्रेम करता था को पत्री लिखने के समय वह इसी प्रकार की भावनाओं से संघर्ष कर रहा हो। उसके धर्मविज्ञान ने उसको सत्य में स्थिर किया, और उत्साहित किया कि परमेश्वर कष्टों के माध्यम से भी भलाई के लिए कार्य कर रहा था। परन्तु पौलुस का हृदय फिर भी बोझिल था और उसका दुःख गहरा था।

025

फिलिप्पियों को लिखी अपनी पत्री में पौलुस ने उन सभी विपत्तियों को उजागर नहीं किया जो उसके मन में थीं। परन्तु उसने कुछ के बारे में अवश्य बात की, और उसने उस सामूहिक प्रभाव को भी प्रकाशित किया जो उसके मन पर पड़ रहा था। उदाहरणस्वरूप, उसने कष्टों से छुटकारे के रूप में प्राय: मृत्यु के विषय में बात की। जैसे, फिलिप्पियों 3:10 में उसने ये शब्द लिखे :

026

और मैं उसको और उसके मृत्युंजय की सामर्थ को, और उसके साथ दुखों में सहभागी हाने के मर्म को जानूं, और उस की मृत्यु की समानता को प्राप्त करूं। (फिलिप्पियों 3:10)

027

इस पद में पौलुस ने प्रकट किया कि उसके वर्तमान कष्ट इतने अधिक थे कि उनसे बचने की सर्वोत्तम आशा मृत्यु ही थी। और उसने अपने वर्तमान कष्टों को मृत्यु के माध्यम के रूप में देखा। और फिलिप्पियों 1:20 में पौलुस ने इस प्रकार अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट किया :

028

मैं तो यही हार्दिक लालसा और आशा रखता हूँ, कि मैं किसी बात में लज्जित न होऊं, पर जैसे मेरे प्रबल साहस के कारण मसीह की बड़ाई मेरी देह के द्वारा सदा होती रही है, वैसा ही अब भी हो चाहे मैं जीवित रहूँ वा मर जाऊं। (फिलिप्पियों 1:20)

029

पौलुस में इस समय साहस की कमी थी, परन्तु उसे आशा थी कि परखे जाने से पहले उसे यह प्राप्त हो जाएगा। वह मसीह को सम्मान देना चाहता था, चाहे वह परीक्षा में स्थिर खड़े रहने के द्वारा हो या फिर अपने विश्वास के अंगीकरण को न त्यागते हुए गरिमा और निश्चय के साथ मरने के द्वारा। और इसके ठीक बाद पौलुस ने इन शब्दों के द्वारा मृत्यु की अपनी इच्छा व्यक्त की :

030

क्योंकि मेरे लिये जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है। पर यदि शरीर में जीवित रहना ही मेरे काम के लिये लाभदायक है... क्योंकि मैं दोनों के बीच अधर में लटका हूँ; जी तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूँ, क्योंकि यह बहुत ही अच्छा है। (फिलिप्पियों 1:21-23)

031

जिस समय उसने यह लिखा, पौलुस मरना चाहता था। परन्तु सामान्यत: वह जीवित रहना और प्रचार करना- नए स्थानों पर और नए लोगों के पास सुसमाचार लेकर जाना और संसार में उद्धार लाना चाहता था।

032

अब सामान्य परिस्थितियों में मसीहियों को मरने की चाहत नहीं करनी चाहिए। हां, अपनी मृत्यु के समय हम अपने प्रभु के साथ होंगे, और हमें इसकी प्रतीक्षा करनी चाहिए, परन्तु इतनी नहीं कि हम मृत्यु को एक मित्र के समान गले लगा लें। हमें जीवन के लिए रचा गया है और पवित्रशास्त्र सिखाता है कि मृत्यु एक शाप है। स्वयं पौलुस ने 1कुरिन्थियों 15:26 में मृत्यु को एक शत्रु कहा है। परन्तु पौलुस के जीवन के इस बिंदू पर उसकी परिस्थितियां इतनी कष्टकर थीं कि मसीह के साथ होने के लाभ उसे सेवकाई में बने रहने की चाहत और मृत्यु के लिए उसकी घृणा से अधिक लगे।

033

परन्तु पौलुस ने अपने व्याकुल मन को केवल मृत्यु की अपनी इच्छा से प्रकट नहीं किया। उसने कई अन्य स्थानों पर भी इसका स्पष्ट रूप से वर्णन किया। उदाहरण के तौर पर, फिलिप्पियों 2:27-28 में उसने इन शब्दों में इपफ्रुदीतुस की बीमारी से चंगाई का वर्णन किया :

034

इपफ्रुदीतुस बीमार तो हो गया था, यहां तक कि मरने पर था, परन्तु परमेश्वर ने उस पर दया की; और केवल उस ही पर नहीं, पर मुझ पर भी, कि मुझे शोक पर शोक न हो। इसलिये मैं ने उसे भेजने का और भी यत्न किया कि तुम उस से फिर भेंट करके आनन्दित हो जाओ और मेरा शोक घट जाए। (फिलिप्पियों 2:27-28)

035

इपफ्रुदीतुस की मृत्यु पौलुस के पहले के कष्टों में और अधिक कष्ट जोड़ सकती थी। और यद्यपि इपफ्रुदीतुस का पुन: फिलिप्पी लौट जाना पौलुस की चिंताओं को कम अवश्य करेगा परन्तु इसे बिल्कुल समाप्त नहीं करेगा।

036

शायद पौलुस के दुःख और व्याकुलता, और मृत्यु के बारे में उसके कथनों का सर्वोत्तम स्पष्टीकरण यह है कि इस समय में उसका जीवन गंभीर खतरे में था। जिस प्रकार हमने पिछले अध्याय में देखा, उसने यह पत्री रोम या कैसरिया मरितिमा से लिखी होगी। यदि उसने रोम से लिखी हो तो शायद उसे अपेक्षा थी कि कैसर उसे दोषी ठहराएगा। और यदि उसने कैसरिया मरितिमा से लिखी हो तो वह यहूदियों द्वारा उसको मार डालने की योजना से चंतित होगा। पर चाहे जैसा भी खतरा वहां हो, ऐसा प्रतीत होता है कि पौलुस इस संभावना के बारे में सोच रहा था कि शीघ्र ही उसकी मृत्यु हो जाएगी।

037

उदाहरण के तौर पर फिलिप्पियों 1:20 में उसने आशापूर्ण रूप से लिखा “मसीह की बड़ाई मेरी देह के द्वारा सदा होती रही है, वैसी ही अब भी हो, चाहे मैं जीवित रहूँ या मर जाऊँ।”और 1:20 में उसने यह दर्शाया कि उसके समक्ष मरने का विकल्प भी हो सकता है, परन्तु उसने यह भी लिखा कि यदि मुझे इस देह में जीवित रहना भी हो तो इसका अर्थ मेरे लिए फलदायक परिश्रम होगा। फिर भी मैं किसे चुनूं? 2:17 में उसने इस संभावना के विषय में बात की कि “वह अर्घ के समान उंडेला जा रहा था।” और 3:10 में उसने सुझाव दिया कि मसीह के कष्टों में उसकी वर्तमान सहभागिता पौलुस को “उसकी मृत्यु में मसीह के समान बनने” की ओर अगुवाई कर सकती है।

038

परन्तु पौलुस पूरी तरह से आश्वस्त नहीं था कि उसकी मृत्यु होगी। इसी पत्री में अन्य स्थान पर उसने इस आशा को प्रकट किया था कि वह जीवित रहेगा। उदाहरणत: फिलिप्पियों 1:25 में उसने लिखा कि “मैं जानता हूँ कि मैं जीवित रहूँगा” और उसने इस आशा को दर्शाया कि वह फिलिप्पियों के प्रति सुचारु सेवकाई करने के लिए जीवित रहेगा।

039

पौलुस पूरी तरह से आश्वस्त नहीं था कि उसके साथ क्या होगा। एक ओर वह जानता था कि उसकी मृत्यु एक वास्तविक संभावना थी, और इसलिए उसने फिलिप्पी में अपने मित्रों को इस त्रासदी के लिए तैयार करने का प्रयास किया। दूसरी ओर उसे कुछ यह अपेक्षा भी थी कि वह जीवित रहेगा, और इसलिए उसने सर्वोत्तम की आशा रखने के लिए उत्साहित किया। परन्तु उसके भविष्य में उसके लिए जो भी था, अपनी पत्री लिखे जाने के समय वह बहुत कष्ट सह रहा था, इसलिए उसने दुःख और आशंका से संघर्ष किया।

040

फिलिप्पियों के साथ पौलुस के रिश्ते और कारागृह में उसके दुःखों को देखने के पश्चात् हमें उन परिस्थितियों की जांच करनी चाहिए जो पौलुस द्वारा पत्री लिखे जाने के समय फिलिप्पी में थीं। ऐसी कौनसी परिस्थितियों का उन्होंने सामना किया जिन्होंने पौलुस के ध्यान और शिक्षा की मांग की?

041

फिलिप्पी की परिस्थितियां

पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया की अनेक परिस्थितियों को संबोधित किया, परन्तु हम केवल दो विषयों पर ध्यान देंगे- पौलुस के लिए फिलिप्पी की कलीसिया की चिंता; और फिलिप्पी की कलीसिया में पाई जाने वालीं आंतरिक और बाहरी समस्याएं। आइए पौलुस के लिए फिलिप्पियों की चिंता का उल्लेख करते हुए आरंभ करें।

042

पौलुस के लिए चिंता

सामान्य रूप में फिलिप्पी की कलीसिया का प्रेरित पौलुस से मजबूत और प्रेमपूर्ण संबंध था। और जब उन्होंने कारागृह में उसके कष्टों के बारे में सुना तो वे निराश हो गए और उसके प्रति चिंतित हो गए। इसलिए, जितनी जल्दी हो सके उन्होंने पौलुस की भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भेंट और पौलुस को वह भेंट पहुंचाने के लिए और कारागृह में उसकी सेवा करने के लिए इपफ्रुदीतुस को भेजकर अपनी परवाह को प्रकट किया। पौलुस ने धन्यवाद के इस कथन को लिखते हुए इस भेंट का उल्लेख फिलिप्पियों 4:18 में किया :

043

मेरे पास सब कुछ है, वरन बहुतायत से भी है: जो वस्तुएं तुम ने इपफ्रुदीतुस के हाथ से भेजी थीं उन्हें पाकर मैं तृप्त हो गया हूँ, वह तो सुगन्ध और ग्रहण करने के योग्य बलिदान है, जो परमेश्वर को भाता है। (फिलिप्पियों 4:18)

044

जैसे हम उल्लेख कर चुके हैं फिलिप्पी के लोग धनी नहीं थे, इसलिए यह भेंट उनकी ओर से एक महत्वपूर्ण त्याग के रूप में समझी गई। परन्तु उन्होंने उसे बहुत ही उत्सुकतावश भेजा था क्योंकि वे पौलुस की सलामती के विषय में चिंतित थे। और जिस प्रकार हम फिलिप्पियों 2:25 में पढ़ते हैं, फिलिप्पी की कलीसिया ने इपफ्रुदीतुस को भी कारागृह में पौलुस की सेवा करने के लिए भेजा था। वहां पौलुस के शब्दों को सुनें :

045

पर मैं ने इपफ्रुदीतुस को जो... तुम्हारा दूत, और आवश्यक बातों में मेरी सेवा टहल करनेवाला है, तुम्हारे पास भेजना अवश्य समझा। (फिलिप्पियों 2:25)

046

स्पष्टत: इपफ्रुदीतुस ने पौलुस को यह विवरण भी प्रदान किया जिसमें फिलिप्पियों के इस भय को किया गया कि पौलुस को अन्य विश्वासियों के द्वारा सताया जा रहा था, और कि मृत्यु का खतरा उसके सिर पर मंडरा रहा था। और उनको लिखी अपनी पत्री में पौलुस ने इस बात को निश्चित किया कि फिलिप्पियों ने उसकी परिस्थितियों को अच्छी तरह से समझ लिया था, और उसने उनकी परवाह के लिए अपनी सराहना को व्यक्त किया।

047

उदाहरण के तौर पर फिलिप्पियों 1:15-17 में उसने स्वीकार किया कि सुसमाचार के कुछ प्रचारक उन्हें सता रहे थे। उसने इन शब्दों के साथ इस परिस्थिति का वर्णन किया :

048

कितने तो डाह और झगड़े के कारण मसीह का प्रचार करते हैं... और कई एक तो सीधाई से नहीं पर विरोध से मसीह की कथा सुनाते हैं, यह समझ कर कि मेरी कैद में मेरे लिये क्लेश उत्पन्न करें। (फिलिप्पियों 1:15-17)

049

वास्तव में पौलुस के दु:खी होने का एक कारण यह था कि उसके आस-पास के कुछ ही विश्वासी और मसीही अगुवों ने सच्चाई से सुसमाचार की सेवकाई के लिए अपने हृदयों को समर्पित किया था। इस संबंध में फिलिप्पियों 2:21 में पौलुस के शब्दों को सुनें :

050

क्योंकि सब अपने स्वार्थ की खोज में रहते हैं, न कि यीशु मसीह की। (फिलिप्पियों 2:21)

051

सारांश में, इस समय में पौलुस की परवाह करने पर फिलिप्पियों को सही ठहराया गया था। पौलुस की विपत्तियां बड़ी थीं और उसके लिए सहायता बहुत ही कम थी।

052

परन्तु फिलिप्पी के लोग केवल इसी बात से चिंतित नहीं थे कि पौलुस कष्टों को सह रहा है। वे इस बात से चिंतित थे कि कहीं उसकी मृत्यु न हो जाए, चाहे वह उसकी हत्या के द्वारा हो या फिर सार्वजनिक दण्ड के द्वारा। और ये डर उचित भी थे। जैसा कि हमने पिछले अध्यायों में देखा है, यहूदियों ने बहुत बार पौलुस की हत्या करने का प्रयास किया था, और जिस अपराध का उस पर आरोप लगाया था उसके कारण वह मृत्यु की सजा का हकदार था। अत: प्रेरित के प्रति गहरी चिंता से फिलिप्पियों ने स्वयं को पौलुस के लिए प्रार्थना करने में लगा दिया। फिलिप्पियों 1:19 और 20 में उसने उत्साह के इन शब्दों के साथ उनकी प्रार्थनाओं के लिए उनका आभार प्रकट किया :

053

क्योंकि मैं जानता हूँ, कि तुम्हारी विनती के द्वारा, और यीशु मसीह की आत्मा के दान के द्वारा इस का प्रतिफल मेरा उद्धार होगा। मैं तो यही हार्दिक लालसा और आशा रखता हूँ, कि... मसीह की बड़ाई मेरी देह के द्वारा सदा होती रही है, वैसा ही अब भी हो चाहे मैं जीवित रहूँ वा मर जाऊं। (फिलिप्पियों 1:19-20)

054

पौलुस फिलिप्पियों की प्रार्थनाओं के लिए बहुत ही आभारी था और उसने उन्हें आश्वस्त किया कि मृत्यु भी उसके कष्टों से एक स्वागतयोग्य छुटकारा होगी।

055

पौलुस की सलामती के प्रति फिलिप्पियों की चिंता या परवाह पर चर्चा करने के बाद हमें कलीसिया में पाई जाने वाली उन समस्याओं पर ध्यान देना चाहिए जो अनेक स्रोतों से उत्पन्न हुईं थीं।

056

कलीसिया के लिए समस्याएं

फिलिप्पी की कलीसिया ने कम से कम तीन प्रकार की समस्याओं का सामना किया था- पहली, ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने कलीसिया से बाहर के लोगों से सताव का सामना किया। दूसरी, उन्हें वैसी ही झूठी शिक्षाओं की संभावना का खतरा उठाना पड़ा जैसी दूसरी कलीसियाओं में भी पाई जाती थीं। और तीसरी, उन्होंने कलीसिया में परस्पर मतभेद या कलह से भी संघर्ष किया। पौलुस ने फिलिप्पियों 1:27-30 में इन शब्दों को लिखते हुए उस सताव का उल्लेख किया जिसका वे सामना कर रहे थे :

057

एक ही आत्मा में स्थिर हो, और एक चित्त होकर सुसमाचार के विश्वास के लिये परिश्रम करते रहते हो। और किसी बात में विरोधियों से भय नहीं खाते... मसीह के कारण तुम पर यह अनुग्रह हुआ कि न केवल उस पर विश्वास करो पर उसके लिये दुःख भी उठाओ। और तुम्हें वैसा ही परिश्रम करना है, जैसा तुम ने मुझे करते देखा है, और अब भी सुनते हो, कि मैं वैसा ही करता हूँ। (फिलिप्पियों 1:27-30)

058

कुछ वर्ष पूर्व फिलिप्पी में कलीसिया की स्थापना के ठीक बाद पौलुस ने मकिदुनिया के पड़ोसी नगर थिस्सलुनिके में यहूदियों के बड़े विरोध का सामना किया था। जैसा कि हम प्रेरितों के काम 17:5-13 में पढ़ते हैं, इन क्रोधित यहूदियों ने पौलुस और अन्य विश्वासियों पर रोमी कानून का उल्लंघन करने का आरोप लगाया। फलस्वरूप, पौलुस को यहूदियों द्वारा और अधिक सताव और लोक प्रशासन द्वारा गिरफ्तार किए जाने से बचने के लिए रात में उस नगर से भागना पड़ा। थिस्सलुनिके के ये यहूदी इतने जोश से भरे हुए थे कि उन्होंने बिरिया नगर तक पौलुस का पीछा किया। अत: यह सोचना उचित है कि यही यहूदी, या उनके जैसे दूसरे यहूदियों ने फिलिप्पी की कलीसिया को भी विचलित कर दिया था, और शायद स्थानीय प्रशासन को भी कलीसिया के विरुद्ध भड़का दिया था। परन्तु फिलिप्पी में सताव का सटीक विषय चाहे जो भी हो, कम से कम यह स्पष्ट है कि कलीसिया को अविश्वासियों द्वारा बहुत सताया जा रहा था।

059

फिलिप्पियों की कलीसिया द्वारा सामना की गई दूसरी समस्या झूठी शिक्षा का खतरा थी। अब ऐसा प्रतीत होता है कि झूठी शिक्षा ने फिलिप्पी की कलीसिया पर अभी तक गहराई से प्रभाव नहीं डाला था, क्योंकि पौलुस ने अभी तक इसका प्रत्यक्ष रूप से खण्डन नहीं किया था। परन्तु उसने फिलिप्पियों को उस प्रत्येक झूठी शिक्षा को ठुकराने के लिए तैयार कर दिया था जो उस नगर में पहुंच सकती थी। फिलिप्पियों 3:1-3 में खतने के विषय में पौलुस के शब्दों पर ध्यान दीजिए :

060

वे ही बातें तुम को बार बार लिखने में मुझे तो कोई कष्ट नहीं होता, और इस में तुम्हारी कुशलता है। कुत्तों से चौकस रहो, उन बुरे काम करनेवालों से चौकस रहो, उन काट कूट करनेवालों से चौकस रहो। क्योंकि खतनावाले तो हम ही हैं। (फिलिप्पियों 3:1-3)

061

पौलुस चिंतित था कि जिन झूठे शिक्षकों ने खतने के दुरुपयोगों की वकालत की थी, वे फिलिप्पियों की कलीसिया को परेशान कर सकते थे। उसने फिलिप्पियों 3:18-19 में झूठी शिक्षा की भी निंदा की :

062

क्योंकि बहुतेरे... अपनी चालचलन से मसीह के क्रूस के बैरी हैं। उन का अन्त विनाश है, उन का ईश्वर पेट है, वे अपनी लज्जा की बातों पर घमंड करते हैं, और पृथ्वी की वस्तुओं पर मन लगाए रहते हैं। (फिलिप्पियों 3:18-19)

063

पौलुस की भाषा यहां कितनी भी झूठी शिक्षाओं का वर्णन कर सकती हैं, जिसमें खान-पान संबंधी निषेध और पुराने नियम के खान-पान संबंधी नियमों का अनुचित प्रयोग जैसी बातें भी शामिल हो सकती हैं।

064

अब इस प्रकार की झूठी शिक्षाएं दो प्रकार के स्रोतों से निकली हो सकती है। एक ओर तो पौलुस शायद उन झूठी शिक्षाओं के प्रति चिंतित होगा जिन्होंने कुलुस्से और लिकुस घाटी की कलीसियाओं के लिए खतरा उत्पन्न कर दिया था।

065

जिस प्रकार हमने पिछले अध्याय में उल्लेख किया था, लिकुस घाटी में फैली इन झूठी शिक्षाओं ने मसीही शिक्षा के साथ यूनानी दर्शनशास्त्र, सन्यासवाद और यहूदी व्यवस्था के भ्रष्ट रूपों को जोड़ दिया था। उदाहरण के तौर पर, पौलुस ने कुलुस्सियों 2:11 और 12 में विशेष रूप से इस झूठी शिक्षा को खतने के अनुचित प्रयोग के साथ, और कुलुस्सियों 2:20-23 में खान-पान संबंधी निषेध के साथ जोड़ा।

066

दूसरी ओर, वह शायद यरुशलेम के मसीही यहूदियों से चिंतित होगा, उनके विषय में जिनके विरुद्ध पौलुस ने काफी पहले गलातियों 2:11-21 में और हाल ही में रोमियों 4:9-17 में लिखा था। यह संभव है कि उसका सामना उनसे यरुशलेम की उस यात्रा के दौरान हुआ हो जिसके कारण उसे वर्तमान कारावास में डाला गया था। लिकुस घाटी के झूठे शिक्षकों के समान यहूदी मसीहियों ने भी खतना और खान-पान का दुरुपयोग किया और गैरयहूदी विश्वासियों को पुराने नियम की व्यवस्था के पुराने प्रारूपों का पालन करने को बाध्य किया।

067

अंत में, सताव और झूठी शिक्षा की परेशानियों के अतिरिक्त फिलिप्पियों ने कलीसिया के भीतर ही विरोधों से संघर्ष किया। पौलुस ने फिलिप्पियों 2:1-3 में इस उपदेश के साथ सामान्य शब्दों में इन विरोधों को संबोधित किया :

068

सो यदि मसीह में कुछ शान्ति और प्रेम से ढाढ़स और आत्मा की सहभागिता, और कुछ करूणा और दया है। तो मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक मन रहो और एक ही प्रेम, एक ही चित्त, और एक ही मनसा रखो। विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। (फिलिप्पियों 2:1-3)

069

और फिलिप्पियों 4:2 में उसने इन शब्दों को लिखते हुए उन दो स्त्रियों को उपदेश दिया जो अपने मतभेदों को सुलझा नहीं पा रहीं थीं :

070

मैं यूआदिया को भी समझाता हूँ, और सुन्तुखे को भी, कि वे प्रभु में एक मन रहें। (फिलिप्पियों 4:2)

071

अब फिलिप्पी में आंतरिक विरोध के लिए कठोर अनुशासन की जरुरत नहीं थी। परन्तु फिर भी वे विघटनकारी, निष्फल और पापमय थे। स्वार्थी, प्रेमरहित संघर्ष को कलीसिया में कभी स्वीकार नहीं किया जा सकता। अत: पौलुस ने कलीसिया में एकता और प्रेम पर बल देने में काफी स्थान को समर्पित किया।

072

अब जब हमने फिलिप्पियों की पृष्ठभूमि पर चर्चा कर ली है, तो हम अपने दूसरे विषय की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं- वह है, फिलिप्पी की कलीसिया को पवित्रशास्त्र में पाई जाने वाली पौलुस की पत्री की संरचना और विषयवस्तु।

073

संरचना एवं विषयवस्तु

जब हम फिलिप्पियों को लिखी पौलुस की पत्री की संरचना और विषयवस्तु को देखते हैं, तो हम इस पत्री को छ: मुख्य भागों में विभाजित करेंगे- 1:1-2 में अभिवादन; 1:3-8 में आभारप्रदर्शन का भाग; 1:9-11 में फिलिप्पियों के लिए पौलुस की प्रार्थना; 1:12 से 4:20 में पत्री का मुख्य भाग; और 4:21-23 में पौलुस के अंतिम अभिनंदन। आइए, पद 1 और 2 में अभिवादन के साथ आरंभ करें-

074

अभिवादन

1:1 और 2 में अभिवादन पौलुस को पत्री के प्राथमिक लेखक के रूप में पहचानता है और दर्शाता है कि यह पत्री तीमुथियुस की ओर से भी है। इस पूरी पत्री में पौलुस ने स्वयं को नियमित रूप से एकवचन शब्दों जैसे “हम” की अपेक्षा “मैं” का प्रयोग करते हुए दर्शाया है। और फिलिप्पियों 2:19 और 22 में उसने तीमुथियुस का उल्लेख तीसरे व्यक्ति के रूप में किया।

075

फिलिप्पियों का अभिवादन पौलुस की अधिकांश अन्य पत्रियों में पाए जाने वाले अभिवादन से अलग है क्योंकि यह पौलुस की प्रेरिताई का उल्लेख नहीं करता। केवल 1 और 2थिस्सलुनिकियों और फिलेमोन में ही यही भिन्नता पाई जाती है। परन्तु पौलुस की ये सभी तीनों अन्य पत्रियां अभिवादनों से बाहर पौलुस के प्रैरितिक अधिकार का उल्लेख करती हैं। केवल फिलिप्पियों ही एकमात्र ऐसी पत्री है जिसमें पौलुस कभी स्पष्ट रूप से अपने प्रैरितिक अधिकार का वर्णन नहीं करता है।

076

अब इसका अर्थ यह नहीं है कि फिलिप्पियों को लिखी पौलुस की पत्री में प्रैरितिक अधिकार की कमी पाई जाती है। बल्कि फिलिप्पियों के साथ उसके संबंध, पौलुस के लिए उनके बड़े आदर, और प्रभु को आनन्दित करने की उनकी उत्सुकता की गवाही है। पौलुस को एक बार भी उन्हें अपने कार्यभार और अधिकार के बारे में स्मरण करवाने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

077

अभिवादन के बाद पौलुस 1:3-8 में आभार-प्रदर्शन के खण्ड की ओर मुड़ता है। अभिवादन से आभार-प्रदर्शन की ओर मुड़ना उसी रीतिनुसार है जिसका अनुसरण पौलुस गलातियों और तीतुस के अतिरिक्त पवित्रशास्त्र में पाई जाने वाली अपनी अन्य पत्रियों में करता है।

078

आभार-प्रदर्शन

पौलुस के आभार-प्रदर्शन का पहला भाग, जो फिलिप्पियों 1:3-6 में पाया जाता है, धन्यवाद के उच्च स्तरीय कथन को प्रस्तुत करता है और फिलिप्पियों द्वारा पौलुस के जीवन में लाए गए आनन्द और उनके उद्धार की उसकी अपेक्षाओं के बारे में बात करता है।

079

परन्तु फिलिप्पियों 1:7-8 पौलुस के आभारप्रदर्शन में अपेक्षाकृत रूप से अलग ही पाए जाते हैं जो फिलिप्पियों के लिए पौलुस के प्रेम पर बल देते हैं। वहां पर उसके शब्दों को सुनें :

080

उचित है, कि मैं तुम सब के लिये ऐसा ही विचार करूं क्योंकि तुम मेरे मन में आ बसे हो इस में परमेश्वर मेरा गवाह है, कि मैं मसीह यीशु की सी प्रीति करके तुम सब की लालसा करता हूँ। (फिलिप्पियों 1:7-8)

081

ये पद दर्शाते हैं कि फिलिप्पियों के साथ पौलुस का संबंध बहुत ही व्यक्तिगत और हृदय से जुड़ा हुआ था।

082

प्रार्थना

अपने आभार-प्रदर्शन के बाद पौलुस ने 1:9-11 में फिलिप्पियों के लिए प्रार्थना की। यह प्रार्थना काफी संक्षिप्त है, परन्तु यह उन कथनों से भरी हुई है जो पूरी पत्री में दिए गए महत्व को प्रदर्शित करती है।

083

वास्तव में पौलुस ने प्रार्थना की कि फिलिप्पी के विश्वासी उन रूपों में जीवन जीने के द्वारा अपने मसीही प्रेम को प्रदर्शित करें जिनके द्वारा परमेश्वर को सम्मान मिले। पहला, उसने प्रार्थना की कि उनमें सही निर्णय लेने के लिए आवश्यक पहचान-शक्ति हो। दूसरा, उसने प्रार्थना की कि यह पहचान-शक्ति उन्हें अच्छे कार्य करने और न्याय के लिए मसीह के पुन: आगमन तक विश्वास और कार्य में बने रहने में उनकी अगुवाई करे। अंत में, उसने प्रार्थना की कि फिलिप्पी के विश्वासी अपने अच्छे कार्यों और दृढ़ता के माध्यम से परमेश्वर को महिमा और स्तुति प्रदान करे।

084

अपनी प्रार्थना के बाद पौलुस फिलिप्पियों को लिखी अपनी पत्री के मुख्य भाग की ओर मुड़ा जो 1:12 से 4:20 में पाया जाता है। भिन्न विद्वानों के द्वारा इस भाग की अनेक प्रकार से रूपरेखा प्रदान की गई है। परन्तु इस अध्याय में हमारी रूपरेखा फिलिप्पियों की कलीसिया को पौलुस द्वारा कहे गए उत्साहपूर्ण शब्दों और निर्देशों के तार्किक बहाव का अनुसरण करेगी।

085

मुख्य भाग

जब पौलुस ने फिलिप्पियों को लिखा तो वह बहुत कष्ट सह रहा था, और उसका अपना जीवन भी खतरे में था। फलस्वरूप, वह विपत्तियों और चिंता के द्वारा घिरा हुआ था। हम उसका वर्णन निराश होने के रूप में भी कर सकते हैं। और इस दृष्टिकोण से उसने फिलिप्पी के विश्वासियों को पत्री लिखी।

086

पौलुस जानता था कि ये शायद उसके अंतिम शब्द होंगे। इसलिए उसने उनके लिए अपनी तीव्र भावनाओं को व्यक्त किया और उन्हें यह बताया कि वह उनसे कितना प्यार करता था और वह उनकी मित्रता और सेवकाई के लिए कितना आभारी था। और उसने उनसे बुद्धि के अंतिम शब्द कहे और उन्हें परमेश्वर को सम्मान देने के रूपों में विपदाओं से निपटना सिखाया।

087

फिलिप्पियों पर इस संपूर्ण दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए हम उसकी पत्री के मुख्य भाग में उसके विचारों के निम्नलिखित क्रम को देख सकते हैं- पहला, 1:12-26 में कारागृह में पौलुस की दृढ़ता; दूसरा, 1:27 से 4:9 में फिलिप्पियों से निरन्तर आगे बढ़ने के उपदेश; और तीसरा, 4:10 से 20 में फिलिप्पियों की दृढ़ता के विषय में पौलुस की पुष्टि। हम 1:12 से 26 में कारागृह में पौलुस की दृढ़ता के साथ आरंभ करने के द्वारा शुरु करके इन भागों पर ध्यान से चर्चा करेंगे।

088

पौलुस की दृढ़ता

पौलुस कारागृह में अपने कष्टों का इनकार करने या फिर उन्हें अपनाने के द्वारा नहीं परन्तु कष्टों के बीच में आनन्दित रहने के कारणों को पाने के द्वारा दृढ़ बना रहा। और फिलिप्पियों को इस बात में उत्साहित करने को स्पष्ट करने और बचाव करने में समय बिताया। उसने उनकी परवाह की सराहना की परन्तु वह नहीं चाहता था कि वे उसकी परिस्थितियों के कारण व्यथित हो जाएं।

089

पत्री के इस भाग में उसने अपने उस आनन्द के तीन स्रोतों पर ध्यान दिया जो उसने अपने कष्टों के बीच पाया- पद 12 से 18क में उसकी वर्तमान सेवकाई की सफलता; पद 18ख से 21 में भविष्य के छुटकारे के लिए उसकी आशा; और पद 22 से 26 में भविष्य की सेवकाई के प्रति उसका पूर्वानुमान। पौलुस ने स्पष्ट किया कि अच्छी बातों पर ध्यान देने के द्वारा वह अपनी कठिनाइयों को बेहतर रूप से सहन कर पाया।

090

उदाहरण के तौर पर, पद 12 से 18क में उसने स्पष्ट किया चाहे वह कारागृह में कष्ट सह रहा था परन्तु वह प्रसन्न था कि उसकी वर्तमान सेवकाई लगातार आगे बढ़ती रही। फिलिप्पियों 1:17-18 में उसके वर्णन को सुनें :

091

और कई एक तो सीधाई से नहीं पर विरोध से मसीह की कथा सुनाते हैं, यह समझ कर कि मेरी कैद में मेरे लिये क्लेश उत्पन्न करें। सो क्या हुआ? केवल यह, कि हर प्रकार से चाहे बहाने से, चाहे सच्चाई से, मसीह की कथा सुनाई जाती है, और मैं इस से आनन्दित हूँ। (फिलिप्पियों 1:17-18)

092

आंशिक रूप से पौलुस ने इसलिए कष्ट सहा क्योंकि द्वेषी प्रचारकों ने उसके लिए मुश्किलें उत्पन्न कर दी थीं। परन्तु चाहे उन्होंने उसे व्यक्तिगत रूप से हानि पहुंचाई, परन्तु वह इस बात से खुश था कि उन्होंने सच्चे सुसमाचार का प्रचार किया था।

093

पौलुस ने भविष्य के छुटकारे की अपनी आशा में भी आनन्द प्राप्त किया, जिसका वर्णन उसने 18ख से 21 पदों में किया। उसने इस संभावना पर ध्यान दिया कि वह अंत में शायद कारागृह से मुक्त हो जाए। परन्तु जैसा हम कह चुके हैं, इस समय के दौरान पौलुस के कष्ट इतने अधिक थे कि मृत्यु भी एक स्वागतयोग्य राहत होती। और इसलिए उसने इस आशा से उत्साह प्राप्त किया कि वह अपने कष्टों से छुटकारा पाएगा, या तो अपनी आजादी के द्वारा या मृत्यु के द्वारा। उसने फिलिप्पियों 1:18 से 21 में अपने दृष्टिकोण का वर्णन किया :

094

मैं आनन्दित रहूँगा भी। क्योंकि मैं जानता हूँ कि... इस का प्रतिफल मेरा उद्धार होगा... चाहे मैं जीवित रहूँ वा मर जाऊं। क्योंकि मेरे लिये जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है। (फिलिप्पियों 1:18-21)

095

एक भाव में मृत्यु के खतरे ने पौलुस को बहुत ही व्याकुल कर दिया था। परन्तु दूसरे भाव में, वह मृत्यु से परे उस आनन्द को देख सका जो स्वर्ग में मसीह की उपस्थिति में उसे मिलेगा। और छुटकारे तथा स्वर्ग पर ध्यान देने के द्वारा पौलुस अपनी परेशानियों के मध्य आनन्द को प्राप्त कर सका।

096

इसी प्रकार फिलिप्पियों 1:22-26 में पौलुस ने आनन्द के स्रोत के रूप में फिलिप्पियों के प्रति अपनी भावी सेवकाई की संभावना देखी। फिलिप्पियों 1:25 और 26 में उसके उत्साहवर्द्धक शब्दों को सुनें :

097

मैं जीवित रहूँगा, वरन तुम सब के साथ रहूँगा जिस से तुम विश्वास में दृढ़ होते जाओ और उस में आनन्दित रहो। और जो घमंड तुम मेरे विषय में करते हो, वह मेरे फिर तुम्हारे पास आने से मसीह यीशु में अधिक बढ़ जाए। (फिलिप्पियों 1:25-26)

098

फिलिप्पी के विश्वासी पौलुस से प्रेम करते थे और उन्होंने इस बात को सुनकर राहत प्राप्त की होगी कि पौलुस के पास अभी भी जीवित रहने की आशा है। और वह भी उनसे प्रेम करता था और उसने मसीह में उनकी खुशहाली के विचार से राहत और संतुष्टि प्राप्त की।

099

दृढ़ बने रहने के उपदेश

उसके बारे में चिंतित न होने के लिए फिलिप्पियों को उत्साहित करने में कारागृह में अपनी दृढ़ता का प्रयोग करने के बाद पौलुस ने फिलिप्पियों 1:27 से 4:9 में फिलिप्पियों से दृढ़ बने रहने के उपदेशों के लम्बे भाग शामिल किए। यहां पौलुस ने उन्हें मसीह में विश्वासयोग्य रहने और कष्टदायक परिस्थितियों में भी उदाहरणपूर्ण जीवन जीने के लिए निर्देश दिए।

100

पौलुस के उपदेशों पर हमारे विचार-विमर्श में हम निम्नलिखित चार मुख्य विषयों पर चर्चा करेंगे- 1:27 से 2:18 में दृढ़ता का महत्व; 2:19 से 30 में दृढ़ता के लिए सहायता जो सेवक प्रदान करते हैं; 3:1 से 16 में पौलुस की अपनी दृढ़ता का उदाहरण; और अंत में 3:17 से 4:9 में दृढ़ बने रहने की चुनौतियों के विषय में उसके निर्देश। सबसे पहले आइए देखें कि मसीही विश्वास और क्रिया में दृढ़ता के महत्व के विषय में पौलुस ने क्या कहा।

101

फिलिप्पियों 1:27-29 में पौलुस ने कठिनाइयों से फिलिप्पियों के संघर्ष को माना और इन शब्दों के साथ उन्हें उत्साहित किया :

102

तुम एक ही आत्मा में स्थिर हो, और एक चित्त होकर सुसमाचार के विश्वास के लिये परिश्रम करते रहते हो। और किसी बात में विरोधियों से भय नहीं खाते... क्योंकि मसीह के कारण तुम पर यह अनुग्रह हुआ कि न केवल उस पर विश्वास करो पर उसके लिये दुख भी उठाओ। (फिलिप्पियों 1:27-29)

103

फिलिप्पियों के कष्ट व्यथित करने वाले और पीड़ादायक थे। परन्तु वे परमेश्वर के नियंत्रण से परे नहीं थे। इसके विपरीत स्वयं परमेश्वर ने आशीष के माध्यमों के रूप में उनके कष्टों की योजना बनाई थी। और इसलिए यह महत्वपूर्ण था कि वे इन मुश्किल भरे समयों में अपने विश्वास को बनाए रखने के द्वारा और धार्मिक जीवन जीने के द्वारा दृढ़ बने रहें।

104

जैसे हम अन्य अध्यायों में देख चुके हैं यीशु के कष्टों का कार्य तब तक पूरा नहीं होगा जब तक वह पुन: लौट ना आए। इसी दौरान, वह कलीसिया के माध्यम से अपने नियुक्त कष्टों को पूरा करता है। क्योंकि विश्वासी मसीह के साथ जुड़े हुए होते हैं, इसलिए जब हम कष्ट सहते हैं तो मसीह भी कष्ट सहता है। और पौलुस के दृष्टिकोण से यह मसीह के नियुक्त कष्टों को पूरा करने के माध्यम ही नहीं थे, बल्कि यह सम्मान का बिल्ला भी था।

105

जैसा हमने अभी फिलिप्पियों 1:27-29 में पढ़ा है, परमेश्वर ने फिलिप्पियों को कष्ट सहने की “अनुमति” ही नहीं दी बल्कि कष्टों में उनकी “अगुवाई” भी की थी। पौलुस ने फिलिप्पियों 2:5-9 में इस विचार को प्रकट किया जहां उसने ये शब्द लिखे :

106

जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो... (उसने) मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली। इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान् भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है। (फिलिप्पियों 2:5-9)

107

यीशु ने अपनी इच्छा से कष्ट और दुर्व्यवहार को कलीसिया के लाभ के लिए सहा और इस बलिदान के लिए उसका पुरस्कार बहुत बड़ा था। इसी प्रकार कलीसिया के लाभ के लिए विश्वासियों को दीनतापूर्वक कष्ट और दुर्व्यवहार सहना चाहिए। और जब हम ऐसा करते हैं तो हमारा पुरस्कार भी बहुत बड़ा होगा। इसीलिए पौलुस फिलिप्पियों 2:17-18 में इन शब्दों को लिख पाया :

108

और यदि मुझे तुम्हारे विश्वास के बलिदान और सेवा के साथ अपना लहू भी बहाना पड़े तौभी मैं आनन्दित हूँ, और तुम सब के साथ आनन्द करता हूँ। वैसे ही तुम भी आनन्दित हो, और मेरे साथ आनन्द करो। (फिलिप्पियों 2:17-18)

109

पौलुस केवल यही नहीं चाहता था कि वे अपने नियुक्त कष्टों को सहें, बल्कि उनसे मिलने वाली आशीषों के कारण कष्टों के मध्य आनन्द करें। इससे बढ़कर वह चाहता था कि वे उन आशीषों में आनन्द करें जो उसके अपने कष्टों से उत्पन्न होंगे, उसी प्रकार जिस प्रकार उसने उन आशीषों में आनन्द उठाया जो उनके कष्टों से उत्पन्न हुईं थीं।

110

पौलुस ने विश्वासियों को कष्ट के पुरस्कारों पर केन्द्रित रहने को उत्साहित किया ताकि वे बड़े दबाव में भी विश्वास और पवित्र जीवन जीने में दृढ़ता हासिल करने के लिए शक्ति और साहस प्राप्त करें। आखिरकार, यदि वे इन्हें सहन न करें तो वे कष्टों से मिलने वाली आशीषों को प्राप्त नहीं करेंगे।

111

दृढ़ता के महत्व पर बल देने और उन्हें इनकी आशीषों से प्रेरित करने के बाद पौलुस ने उनकी देखरेख करने के लिए सेवकों को भेजने के द्वारा उनके द्वारा सही गई कठिनाइयों के माध्यम से दृढ़ता प्राप्त करने के लिए फिलिप्पियों को व्यावहारिक सहायता प्रदान की।

112

पौलुस जानता था कि उसकी पत्री फिलिप्पियों को कष्टों का सामना करना सिखाएगी। परन्तु वह यह भी समझ गया था कि कष्टों को सहना तब आसान होता है जब सच्चे लोग दिन-प्रतिदिन के आधार पर हमारी सहायता करने के लिए हों और वे भी हमारे साथ कष्ट सह रहे हों। अत: पौलुस ने दृढ़ निश्चय कर लिया कि अपनी पत्री के साथ वह आवश्यकता के इस समय में फिलिप्पियों के प्रति सेवकाई करने के लिए अपने मित्रों को भेजे।

113

पहले, पौलुस ने इपफ्रुदीतुस को भेजने की योजना बनाई, वह फिलिप्पियों का ही संदेशवाहक था जो पहले पौलुस की सेवा करने के लिए आया था। ऐसा संभव है कि इपफ्रुदीतुस ही वह था जिसने वास्तव में फिलिप्पियों को पौलुस की पत्री पहुंचाई थी। जैसा कि हम फिलिप्पियों 2:25-30 में सीखते हैं फिलिप्पी की कलीसिया इपफ्रुदीतुस के बारे में चिंतित थी क्योंकि वह बीमार हो गया था, और इपफ्रुदीतुस को भी उनकी परवाह थी क्योंकि वे काफी चिंतित थे। अत: पौलुस ने इपफ्रुदीतुस को पुन: उनके पास भेजा ताकि वह उनके मनों को शांति दे और उनके प्रति सेवकाई करे।

114

फिर, पौलुस ने तीमुथियुस को फिलिप्पी में भेजने की योजना बनाई। कुछ समय के लिए वह कारागृह में पौलुस के साथ रहा और दुःखभरे समय के दौरान उसने प्रेरित के प्रति सेवकाई की। परन्तु जैसा हम फिलिप्पियों 2:19 में देखते हैं पौलुस को आशा थी कि वह शीघ्र ही फिलिप्पियों की सहायता के लिए उसे भेज सके।

115

अंततः, पौलुस को आशा थी कि वह स्वयं कारागृह से मुक्त हो जाएगा और फिलिप्पियों के प्रति सेवकाई करने के लिए आएगा। उसने इस आशा को फिलिप्पियों 2:24 में व्यक्त किया जहां उसने ये शब्द लिखे :

116

और मुझे प्रभु में भरोसा है, कि मैं आप भी शीघ्र आऊंगा। (फिलिप्पियों 2:24)

117

यूनानी शब्द पेपोइथा, जिसका अनुवाद यहां “आश्वस्त” के रूप में किया गया है, का बेहतर अनुवाद शायद “राजी हुआ” होगा। पौलुस अपनी आजादी के प्रति आशान्वित था परन्तु वह इसके बारे में निश्चित नहीं था।

118

सारांश में, पौलुस जानता था कि सहानुभूतिपूर्ण मनुष्य फिलिप्पी की कलीसिया के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होंगे क्योंकि वह कठिनाइयों के बोझ तले संघर्ष कर रही थी। इसलिए उसने ऐसा कार्यक्रम निर्धारित किया जो उन्हें नियमित रूप से दक्ष एवं प्रेमपूर्ण सेवक प्रदान करेगा।

119

उपदेशों के अगले भाग में, जो फिलिप्पियों 3:1-16 में पाया जाता है, पौलुस ने अपनी विचारधारा और व्यवहार दोनों के विषय में स्वयं को विश्वास में दृढ़ता के सकारात्मक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया।

120

विशेषकर, पौलुस ने स्पष्ट किया कि जब उसने मसीह में विश्वास किया था तो उसने परमेश्वर के अनुग्रह और आशीष को प्राप्त करने के लिए सांसारिक स्तरों पर निर्भर रहना बंद कर दिया था और पूरी तरह से मसीह पर निर्भर रहना शुरु कर दिया था। परन्तु यह इसलिए नहीं था कि वह सांसारिक स्तरों से सामंजस्य बिठाने में असफल हो गया था। इसके विपरीत सांसारिक स्तरों के द्वारा पौलुस परमेश्वर के सबसे प्रिय लोगों में होना चाहिए था। फिलिप्पियों 3:4-6 में उसकी विशेषताओं के वर्णन को सुनें :

121

यदि किसी और को शरीर पर भरोसा रखने का विचार हो, तो मैं उस से भी बढ़कर रख सकता हूँ। आठवें दिन मेरा खतना हुआ, इस्त्राएल के वंश, और बिन्यामीन के गोत्र का हूँ; इब्रानियों का इब्रानी हूँ; व्यवस्था के विषय में यदि कहो तो फरीसी हूँ। उत्साह के विषय में यदि कहो तो कलीसिया का सतानेवाला; और व्यवस्था की धार्मिकता के विषय में यदि कहो तो निर्दोष था। (फिलिप्पियों 3:4-6)

122

यदि कोई आम मनुष्य व्यवस्था का पालन करने के द्वारा परमेश्वर की आशीषों को प्राप्त कर पाता, तो वह पौलुस था।

123

परन्तु सच्चाई यह है कि कोई भी पतित मनुष्य परमेश्वर के उद्धार और अनन्त जीवन की आशीषों को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त रूप से भला नहीं हो सकता। और इसलिए पौलुस ने दुनियावी योग्यताओं पर निर्भर होने का इनकार कर दिया और केवल मसीह की योग्यताओं पर निर्भर रहा जो परमेश्वर ने उसे विश्वास के माध्यम से प्रदान की।

124

इसके साथ-साथ उसने यह भी स्पष्ट किया कि विश्वास का मुंह से अंगीकार करना ही हमारे उद्धार के लिए पर्याप्त नहीं है। इसके विपरीत हमें अनन्त जीवन को प्राप्त करने के लिए विश्वास में दृढ़ बने रहना आवश्यक है। हमें अपना विश्वास बनाए रखना आवश्यक है, और हमें पवित्र जीवन जीना भी आवश्यक है, नहीं तो हम अपने विश्वास को झूठा साबित करेंगे।

125

इसीलिए उसने फिलिप्पियों 3:12-16 में मसीह में उद्धार के बारे में इन शब्दों को लिखते हुए दृढ़ता पर काफी बल दिया :

126

यह मतलब नहीं, कि मैं पा चुका हूँ, या सिद्ध हो चुका हूँ: पर उस पदार्थ को पकड़ने के लिये दौड़ा चला जाता हूँ, जिस के लिये मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था... (मैं) निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह इनाम पाऊं, जिस के लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है... सो जहां तक हम पहुंचे हैं, उसी के अनुसार चलें। (फिलिप्पियों 3:12-16)

127

विश्वास को मुंह से अंगीकार करना ही पर्याप्त नहीं है; हमें दृढ़ बने रहने के द्वारा अपने विश्वास को प्रमाणित करना है। और यदि हम अपने उद्धार के लिए मसीह के विश्वास में और भक्तिपूर्ण जीवन में उसके प्रति विश्वासयोग्यता में दृढ़ता से अंत तक बने न रहें तो हम अपने विश्वास को झूठा प्रमाणित करेंगे।

128

पौलुस के अंतिम उपदेश दृढ़ता की चुनौतियों के विषय में थे जिसको उसने फिलिप्पियों 3:17 से 4:9 में संबोधित किया। ये उपदेश प्रमुख रूप से उसके उपदेश के प्रयोग हैं कि फिलिप्पी के विश्वासी उसकी दृढ़ता के उदाहरण का अनुसरण करें।

129

दृढ़ता की चुनौतियों को संबोधित करने में पौलुस ने फिलिप्पियों को उत्साहित किया कि वे परमेश्वर के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता में ठोकर खाने में न तो झूठे शिक्षकों को, न ही कलीसिया में कोई मतभेद को, और न ही व्यक्तिगत कठिनाइयों को अनुमति दें। और उसने उन मार्गों पर ध्यान देने के द्वारा आरंभ किया जिनके द्वारा झूठे शिक्षक कलीसिया पर हमला कर सकते हैं और इसकी दृढ़ता के लिए खतरा बन सकते हैं। फिलिप्पियों 3:18 और 19 को सुनें जहां उसने इस कठोर निन्दा को लिखा :

130

क्योंकि बहुतेरे... अपनी चालचलन से मसीह के क्रूस के बैरी हैं। उन का अन्त विनाश है, उन का ईश्वर पेट है, वे अपनी लज्जा की बातों पर घमंड करते हैं, और पृथ्वी की वस्तुओं पर मन लगाए रहते हैं। (फिलिप्पियों 3:18-19)

131

स्पष्टत: मसीह के क्रूस के शत्रु विश्वासी नहीं थे। परन्तु फिर भी वे ऐसी स्थिति में थे कि वे कलीसिया के लिए खतरा बनें, शायद इसलिए कि उन्होंने फुसलाने के शब्दों में बात की या इसलिए कि वे कलीसिया में प्रभावशाली थे।

132

जैसे भी हो, पौलुस ने बल दिया कि मसीही सच्चे मसीही विश्वास और क्रिया में दृढ़ रहते हुए मसीह के शत्रुओं की झूठी शिक्षाओं को त्याग दें। मुश्किलों और कष्टों से दूर रहने की चाहत सुसमाचार में विश्वास को खोने का पर्याप्त कारण नहीं था; और फुसलाने वाले तर्क प्रभु की शक्ति का स्थान नहीं ले सकते थे।

133

परन्तु पौलुस ने यह चेतावनी भी दी कि कलीसिया के सच्चे विश्वासी भी अन्य विश्वासियों के समक्ष दृढ़ता की चुनौतियों को प्रस्तुत कर सकते हैं। इसके उदाहरण के रूप में उसने यूआदिया और सुन्तुखे के बीच में पाई जाने वाली समस्या का उल्लेख किया। फिलिप्पियों 4:1-3 में उसके शब्दों को सुनें :

134

इसलिये... प्रभु में इसी प्रकार स्थिर रहो। मैं यूआदिया को भी समझाता हूँ, और सुन्तुखे को भी, कि वे प्रभु में एक मन रहें। और हे सच्चे सहकर्मी... कि तू उन स्त्रियों की सहयता कर, क्योंकि उन्होंने मेरे साथ सुसमाचार फैलाने में. . . परिश्रम किया है। (फिलिप्पियों 4:1-3)

135

इस विरोध के द्वारा यूआदिया और सुन्तुखे पवित्र जीवन जीने में मजबूती से खड़े होने में असफल हो रही थीं, और अपने प्रभाव के कारण उन्होंने फिलिप्पी के अन्य विश्वासियों की दृढ़ता को भी खतरे में डाल दिया था।

136

और अंत में पौलुस ने फिलिप्पियों को उपदेश दिया कि वे व्यक्तिगत कठिनाइयों को अनुमति देकर अपनी दृढ़ता में रुकावट पैदा न करें. उसने उन्हें इस बात से भी उत्साहित किया कि वे आनन्दपूर्ण दृष्टिकोण रखें और व्याकुलता को अनुमति न दे ताकि वे निरुत्साहित न हों। फिलिप्पियों 4:4-7 में पाए जाने वाले इन शब्दों में उसके विचारों को अच्छी तरह से प्रस्तुत किया गया है :

137

प्रभु में सदैव आनन्दित रहो; मैं पुन: कहता हूँ कि आनन्दित रहो। किसी बात की चिन्ता न करो, परन्तु प्रत्येक बात में... तुम्हारी विनतियां परमेश्वर के समक्ष प्रस्तुत की जाएं। तब परमेश्वर की शान्ति... मसीह यीशु में तुम्हारे हृदयों और विचारों की रक्षा करेगी। (फिलिप्पियों 4:4-7)

138

पौलुस का व्यावहारिक निर्देश यह था कि विश्वासियों को परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह उन्हें अपनी चिंताओं से मुक्त करे। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि अधिकांश विषयों में पौलुस की अपेक्षा थी कि परिवर्तन दिल और मन का, स्वभाव और दृष्टिकोण का हो।

139

दृढ़ता की पुष्टि

अंत में, 4:10 से 20 में, पौलुस ने फिलिप्पियों की विश्वास और मसीही जीवन में दृढ़ता के शब्दों के द्वारा, विशेषकर पौलुस के प्रति उनकी सुचारु सेवकाई के माध्यम से, पुष्टि करते हुए इस पत्री को समाप्त किया।

140

इस खण्ड में पौलुस ने फिलिप्पियों को उस धन के लिए धन्यवाद दिया जो उन्होंने कारागृह में उसके कष्टों से राहत पहुंचाने के लिए भेजा था। पौलुस की आभार-पत्री ने उन्हें आश्वस्त कर दिया था कि उसे धन प्राप्त हो गया था और इससे उसकी परिस्थितियों में सुधार हुआ था। परन्तु पौलुस के लिए धन का सबसे अधिक प्रभाव भावनात्मक प्रतीत होता है। फिलिप्पियों 4:12-14 में उसके शब्दों को सुनें :

141

मैंने हर बात में और प्रत्येक परिस्थिति में, चाहे तृप्त होने या भूखा रहने, चाहे प्रचुरता में या अभाव में, सन्तुष्ट रहने का रहस्य सीख लिया है,... फिर भी मेरी विपत्ति में मेरा साथ देकर तुमने अच्छा कार्य किया है। (फिलिप्पियों 4:12-14)

142

धन ने शायद उसके कुछ कष्टों को कम कर दिया था, परन्तु उसे संतोष परमेश्वर की ओर से ही मिला। इस धन का सबसे अधिक महत्व यह था कि इसने पौलुस के हृदय को स्पर्श कर लिया था। अपने लिए उनके बलिदान के माध्यम से इन निर्धन मसीहियों ने पौलुस को अहसास करवा दिया था कि वे पौलुस से कितना सच्चा प्रेम करते थे।

143

फिलिप्पियों द्वारा पौलुस के लिए अपने प्रेम को प्रदर्शित करने का इससे बेहतर समय नहीं हो सकता था। इस समय पर पौलुस का कारवास उस पर बहुत बड़ा बोझ बना हुआ था। वह कष्टों को सह रहा था और हताश था। कल्पना कीजिए कि इस बात को स्मरण करना कितना सुखद रहा होगा कि बहुत से लोग उससे प्रेम करते थे उसके कष्टों में सहभागी होना चाहते थे।

144

यह भी सोचा जा सकता है कि फिलिप्पियों ने ही निराशा पर विजय पाने में पौलुस की सहायता की थी। क्या यह उनकी परवाह थी जिसने पौलुस को पुनस्र्थापित कर दिया था? क्या यह उनका प्यार था जिसने उसकी भयानक परिस्थितियों के मध्य आनन्दित होने के उसके निर्णय को प्रेरित किया था? क्या यह उनकी मित्रता थी जिसने पौलुस को स्मरण करवाया कि न तो उसे भूला गया था और न ही वह अकेला था? एक बात तो निश्चित है- पौलुस ने अपने पूरे दिल से फिलिप्पियों से प्रेम किया था। अत: उनके उपहार ने उसे उत्साहित किया।

145

अंतिम अभिनंदन

अंत में, यह पत्री फिलिप्पियों 4:21-23 में पौलुस के अंतिम अभिनंदनों के साथ समाप्त होती है। यह खण्ड काफी स्तरीय है, यद्यपि इन अंतिम अभिनंदनों का पहलू विशेष टिप्पणी प्रदान किए जाने के योग्य है।

146

विशेषकर, फिलिप्पियों 4:22 में पौलुस ने उन संतों की ओर से अभिनंदनों को भेजा जो कैसर के घराने से थे। प्राचीन जगत में कैसर के घराने में उसके परिवार के सदस्य और नौकर शामिल होते थे, चाहे वे उसके साथ महल में रहते हों या नहीं। और उसके नौकर मजदूरों तक ही सीमित नहीं थे; उनमें उसके व्यक्तिगत अंगरक्षक और लोक-सेवक भी शामिल थे।

147

अब कैसर के घराने के उल्लेख ने अनेक बाइबल व्याख्याताओं को यह निष्कर्ष निकालने को प्रेरित किया है कि पौलुस ने यह पत्री रोम से लिखी थी जहां कैसर रहता था और अपने घराने को संचालित करता था। परन्तु हमें जल्दबाजी में यह निर्णय नहीं लेना चाहिए। सच्चाई यह है कि कैसर के साम्राज्य के सभी लोक-सेवकों और रक्षकों को उसके घराने के भाग कहा जाता था, इनमें वे लोग भी शामिल थे जो कैसरिया मरितिमा में रहते थे।

148

चाहे जैसा भी हो कैसर के घराने के विश्वासियों का उल्लेख दर्शाता है कि पौलुस के कारावास ने उसके सुसमाचार की सेवकाई में बाधा उत्पन्न नहीं की थी। इसके विपरीत पौलुस ने चेले बनाना जारी रखा, अपने दरोगाओं में से भी।

149

फिलिप्पियों को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि, और इसकी संरचना और विषयवस्तु की जांच करने के बाद अब हम इस पत्री में पौलुस की शिक्षाओं के आधुनिक प्रयोग पर चर्चा करने की स्थिति में हैं।

150

आधुनिक प्रयोग

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि फिलिप्पियों की पत्री को कई रूपों में हमारे आधुनिक जीवनों पर लागू किया जा सकता है। परन्तु इस अध्याय में हमने दूसरों को उत्साहित करने में पौलुस के उस समय के प्रयास पर ध्यान दिया है जब उसने ऐसे समय का सामना किया जो शायद उसका अंतिम दिन हो सकता था। इस दृष्टिकोण से एक विषय सामने आता है- फिलिप्पियों को दृढ़ बने रहने और परमेश्वर के समक्ष विश्वासयोग्यता के साथ चलने के लिए पौलुस द्वारा दिया गया उत्साह। जब हम इस बात पर चर्चा करते हैं कि फिलिप्पियों का आज हमारे लिए क्या अर्थ है, तो हम उसकी पत्री के इस पहलू पर ध्यान देंगे।

151

जब हम आधुनिक मसीही जीवन के लिए फिलिप्पियों को लिखी पौलुस की पत्री के निहितार्थों के बारे में सोचते हैं तो हम मसीही दृढ़ता के तीन पहलुओं की जांच करेंगे। पहला, हम दृढ़ता की प्रकृति को संबोधित करेंगे। दूसरा, हम दृढ़ता की विचारधारा पर चर्चा करेंगे। और तीसरा, दृढ़ता की कलीसियाई सेवकाई पर चर्चा करेंगे। आइए पहले हम दृढ़ता की प्रकृति की ओर मुड़ें।

152

दृढ़ता की प्रकृति

फिलिप्पियों में दृढ़ता पर पौलुस की शिक्षा को तीन तथ्यों के द्वारा सबसे सरल रूप से समझा जा सकता है- दृढ़ता की परिभाषा; दृढ़ता की आवश्यकता; और दृढ़ता का आश्वासन। इसलिए आइए पौलुस द्वारा दी गई दृढ़ता की परिभाषा को देखने के द्वारा आरंभ करें।

153

परिभाषा

पौलुस ने दृढ़ता को सच्चे विश्वास और धार्मिक जीवन के द्विरूपीय विचारों के साथ समझा। एक ओर तो दृढ़ता मसीह के सुसमाचार में हमारे विश्वास को बनाए रखना और परमेश्वर के समक्ष हमारे धार्मिक स्तर के लिए केवल परमेश्वर की योग्यताओं पर निर्भर रहना है। पौलुस ने इस विषय में फिलिप्पियों 1:27 में लिखा, जहां उसने इन शब्दों के साथ फिलिप्पियों के लिए अपनी आशा को व्यक्त किया :

154

एक मन के साथ सुसमाचार के विश्वास के लिए एक साथ संघर्ष करते हुए एक आत्मा में स्थिर हो। (फिलिप्पियों 1:27)

155

विश्वासियों के रूप में हमें अपनी धारणाओं के विषय में कभी हार न मानते हुए सुसमाचार के प्रति अपने समर्पण में स्थिर रहना आवश्यक है। जब हम विश्वास में दृढ़ बने रहने की बात करते हैं तो उससे हमारा यही अर्थ होता है।

156

मसीह के सुसमाचार में सच्चे विश्वास को कई रूपों में वर्णित किया जा सकता है, परन्तु मसीही विश्वास के उस मुख्य केन्द्र को सुनें जिसका वर्णन पौलुस ने फिलिप्पियों 3:8-9 में किया :

157

मैंने सब वस्तुओं को खो दिया और उन्हें कूड़ा-करकट मानता हूँ, ताकि मैं मसीह को प्राप्त करुं, और उसी में पाया जाऊँ; व्यवस्था-पालन से प्राप्त होने वाली अपनी धार्मिकता के कारण नहीं परन्तु मसीह पर विश्वास करने से प्राप्त होने वाली धार्मिकता से, अर्थात् वह धार्मिकता जो विश्वास के आधार पर परमेश्वर से प्राप्त होती है। (फिलिप्पियों 3:8-9)

158

इस अनुच्छेद में पौलुस ने दर्शाया कि सच्ची धार्मिकता और उद्धार पाने के लिए उसकी सारी मानवीय प्रतिष्ठा और भले कार्य व्यर्थ थे। एक ही बात जो उसे उद्धार प्रदान कर सकती थी वह थी मसीह की धार्मिकता जो विश्वास के द्वारा पौलुस पर लागू होती है।

159

जब तक हम अपनी धार्मिकता के लिए पूरी तरह से मसीह की योग्यताओं पर निर्भर रहते हैं, हम दृढ़ बने रहते और अपने विश्वास में स्थिर खड़े रहते हैं। अब कहने का अर्थ यह नहीं है कि दृढ़ता कभी संदेहों के सामने नहीं झुकती। बल्कि, बात यह है कि दृढ़ विश्वास सुसमाचार के सत्य को पूरी तरह से कभी नहीं नकारता। इससे बढ़कर सच्चे विश्वास को रखने का अर्थ यह नहीं है कि हमारे पास सिद्ध धर्मविज्ञान है। हमारे धर्मविज्ञान में अनेक त्रुटियां होने के बावजूद भी हम सुसमाचार के आधारभूत सिद्धांतों के प्रति विश्वासयोग्य रह सकते हैं। परन्तु जब हम इस केन्द्रीय सत्य पर विश्वास नहीं करते कि हम केवल मसीह और मसीह के द्वारा ही उद्धार पाते हैं, तो हम दृढ़ बने रहने में सचमुच असफल हो जाते हैं।

160

सच्चे विश्वास के रूप में दृढ़ता को परिभाषित करने के अतिरिक्त पौलुस ने दृढ़ता को भले और प्रशंसनीय कार्य करते हुए धार्मिक जीवन जीने के रूप में भी दर्शाया। उदाहरण के तौर पर उसने फिलिप्पियों 2:12 और 13 में इस प्रकार से कहा :

161

अत: हे मेरे प्रियो, जिस प्रकार तुमने सदैव आज्ञा का पालन किया है... डरते और थरथराते हुए अपने उद्धार का कार्य पूरा करो। क्योंकि केवल परमेश्वर ही है जो अपने अच्छे उद्देश्य के लिए तुम्हारे भीतर इच्छा जागृत करने और तुम से कार्य करवाने के लिए सक्रिय है। (फिलिप्पियों 2:12-13)

162

यहां पौलुस ने उद्धार के अनुसार कार्य करते हुए भले कार्यों में जारी रहने के विषय में बात की। अब भले कार्यों में दृढ़ बने रहने का अर्थ यह नहीं है कि हम सिद्ध जीवन बिताते हैं। हम इस जीवन में कभी सिद्धता को प्राप्त नहीं कर सकते, और कभी-कभी हमें गंभीर रूप में ठोकर भी लग जाती है। बल्कि, जब हम विश्वासयोग्यता से मसीह की आज्ञा मानने का प्रयास करते हैं तो हम भले कार्यों में दृढ़ हो सकते हैं।

163

आवश्यकता

अब पौलुस यह नहीं चाहता था कि विश्वासी केवल दृढ़ता की परिभाषा ही जाने; वह यह भी चाहता था कि हम उद्धार को प्राप्त करने के लिए विश्वास और जीवन में दृढ़ता की आवश्यकता को समझ लें ताकि हम दृढ़ता के लिए वास्तव में प्रेरित हो जाएं। फिलिप्पियों 3:8-11 में पौलुस के शब्दों को सुनें :

164

मैंने सब वस्तुओं को खो दिया और उन्हें कूड़ा-करकट मानता हूँ, ताकि मैं मसीह को प्राप्त करुं, और उसी में पाया जाऊँ; व्यवस्था-पालन से प्राप्त होने वाली अपनी धार्मिकता के कारण नहीं परन्तु मसीह पर विश्वास करने से प्राप्त होने वाली धार्मिकता से... कि मैं भी किसी तरह मृतकों में से पुनरुत्थान प्राप्त करुँ। (फिलिप्पियों 3:8-11)

165

सरल भाषा में कहें तो पौलुस ने सिखाया था कि यदि हम सच्चे विश्वास को बनाए रखने में असफल हो जाते हैं तो हम मसीह में नहीं पाए जाएंगे जिससे हम अनन्त महिमा के जीवन के लिए पुन: जी भी नहीं उठेंगे। दूसरे शब्दों में, हमारें संपूर्ण उद्धार के लिए विश्वास में दृढ़ता आवश्यक है।

166

इसी प्रकार फिलिप्पियों 2:14-16 में उसने धार्मिक जीवन के विषय में यह उपदेश दिया :

167

सब कार्य बिना कुड़कुड़ाए और बिना किसी विवाद के किया करो। ताकि तुम निर्दोष और निर्मल बनो, और इस कुटिल और भ्रष्ट लोगों में परमेश्वर की निष्कलंक सन्तान बनकर संसार के मध्य सितारों के समान चमको... ताकि मसीह के दिन मैं इस बात पर गर्व कर सकूँ कि मेरी दौड़-धूप और मेरा परिश्रम व्यर्थ नहीं गया। (फिलिप्पियों 2:14-16)

168

शिकायत और वादविवाद से दूर रहने, अर्थात् धार्मिक रूप से जीवन जीने के द्वारा फिलिप्पी के विश्वासी निष्कलंक और शुद्ध बन सकते थे और जिससे पौलुस को अपनी सेवकाई पर गर्व करने का कारण मिल सकता था। परन्तु यदि वे दृढ़ रहने में असफल हो जाते तो वे इस बात को दर्शाते कि वे परमेश्वर की संतान नहीं थे- कि उन्होंने सच्चाई से मसीह पर विश्वास नहीं किया था- और कि वे अंतिम दिन को बचाए नहीं जाएंगे। और यह हम पर भी लागू होता है- यदि हम धार्मिक जीवन में दृढ़ नहीं बने रहते हैं तो हम स्वयं को अविश्वासी सिद्ध करते हैं और जिससे हम उद्धार प्राप्त नहीं करेंगे।

169

हम में से अनेकों के लिए दृढ़ता की परिभाषा और आवश्यकता पर पौलुस की शिक्षा भयभीत कर देने वाली या कठोर प्रतीत हो सकती है। परन्तु पौलुस की धर्मशिक्षा का तीसरा पहलू भी है जो काफी उत्साहवर्द्धक है, अर्थात् दृढ़ता का आश्वासन। और आश्वासन के प्रकाश में दृढ़ता पर पौलुस की शिक्षा विश्वासियों के लिए खतरा नहीं बल्कि राहत है।

170

आश्वासन

पौलुस ने फिलिप्पियों को आश्वस्त किया था कि प्रत्येक सच्चा विश्वासी निश्चित रूप से विश्वास और धार्मिक जीवन में दृढ़ बना रहेगा जिससे हमारा उद्धार निश्चित हो जाता है। यह आज भी सत्य है कि बहुत से लोग झूठमूठ का विश्वास रखते हैं और वास्तव में दृढ़ बने रहने में असफल हो जाते हैं। परन्तु ये वे लोग हैं जिनमें उद्धार प्रदान करने वाला विश्वास कभी था ही नहीं। दूसरी ओर, वे जिनका विश्वास सच्चा होता है, पवित्र आत्मा को प्राप्त करते हैं जो उनके अंदर दृढ़ता को निश्चित करने के लिए कार्य करता है। फिलिप्पियों 1:6 में पौलुस के शब्दों को सुनें :

171

मुझे पूर्ण निश्चय है कि जिसने तुम में अच्छा कार्य आरम्भ किया है वह उसे मसीह यीशु के दिन तक पूरा भी करेगा। (फिलिप्पियों 1:6)

172

पौलुस इस बात से आश्वस्त था कि यदि परमेश्वर ने फिलिप्पियों को उद्धार देना आरंभ कर दिया है, तो वह फिलिप्पियों को उद्धार देने का कार्य पूर्ण भी करेगा। वह उनमें से किसी को भी नाश होने नहीं देगा, बल्कि मसीह यीशु के दिन तक सभी सच्चे विश्वासियों को दृढ़ बने रहने के लिए प्रेरित करेगा। और पौलुस का भरोसा हमारा भरोसा भी होना चाहिए। यदि हम सचमुच विश्वास करते हैं, तो ऐसा नहीं हो सकता कि हम विश्वास या अनुग्रह से गिर जाएं। पौलुस ने फिलिप्पियों 2:13 में इस विचार की पुष्टि की जहां उसने उत्साह के ये शब्द लिखे :

173

डरते और थरथराते हुए अपने उद्धार का कार्य पूरा करो। क्योंकि केवल परमेश्वर ही है जो अपने अच्छे उद्देश्य के लिए तुम्हारे भीतर इच्छा जागृत करने और तुम से कार्य करवाने के लिए सक्रिय है। (फिलिप्पियों 2:12-13)

174

जो भय हमारे अंदर होना चाहिए वह यह खौफ नहीं है कि हम अंत में अनुग्रह से गिर जाएंगे, बल्कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर के इस अनुभव का द्रवित कर देने वाला भय कि वह इस बात को निश्चित करने के लिए हम में से प्रत्येक के भीतर कार्य कर रहा है कि हम वही सोचें और करें जो वह चाहता है। वह अच्छे उद्देश्य के लिए हमारे हृदयों और मनों को नियंत्रित करता है, जिसमें हमारी दृढ़ता भी शामिल होती है, ताकि हम अंत तक स्थिर खड़े रहने में किसी भी तरह से असफल न हो जाएं।

175

दृढ़ता की विचारधारा

अब जब हमने दृढ़ता की प्रकृति की जांच कर ली है तो अब हम इस स्थिति में हैं कि दृढ़ता की उस विचारधारा पर चर्चा करने के लिए तैयार हैं जो विश्वासियों को अपनानी चाहिए। हमारी चर्चा में हम अपनी विचारधारा के तीन पहलुओं पर चर्चा करेंगे जिन पर पौलुस ने फिलिप्पियों को लिखी पत्री पर बल दिया- नम्रता, आशावाद और आनन्द। आइए पहले पौलुस के इस विचार पर बल दें कि हमारी विचारधारा नम्रता पर आधारित होनी चाहिए।

176

नम्रता

प्रभु यीशु मसीह के आधिकारिक प्रेरित होने के रूप में पौलुस के पास घमण्डी होने के बहुत से अवसर थे। परमेश्वर ने पौलुस को अगुवा बनने के लिए प्रशिक्षित किया था; सबसे बढ़कर उसने पौलुस को गैरयहूदियों के बीच सुसमाचार का प्रचार करने के लिए चुना था; और उसने पौलुस के द्वारा कई चमत्कार भी किए थे। संसार भर की कई कलीसियाओं में पौलुस को एक नायक के रूप में सम्मान दिया जाता था।

177

इसलिए जब वह कारागृह में कष्ट सह रहा था तो वह इस बात को सोचने को लालायित हो सकता था “सब लोगों में से परमेश्वर ने मेरे साथ ही ऐसा होने की अनुमति क्यों दी है? मैं उसके प्रति विश्वासयोग्य रहा हूँ, पर फिर भी वह मुझे आशीष नहीं देता! मैं इससे बेहतर प्राप्त करने के योग्य हूँ!” परन्तु परमेश्वर की भलाई को चुनौती देना मूर्खतापूर्ण और गलत है। परन्तु पौलुस जानता था कि वास्तव में उसके पास परमेश्वर के समक्ष नम्र बने रहने के बहुत से कारण थे। और इस सच्चाई को स्वीकार करने के द्वारा उसने परमेश्वर द्वारा बनाए जाने और अपने द्वारा सही गई कठिनाइयों के माध्यम से दृढ़ बने रहने के लिए स्वयं को तैयार किया।

178

इस विषय में पौलुस ने अपनी विचारधारा को यीशु की विचारधारा के समान बना दिया, जिसने अपने और हमारे लिए परमेश्वर की आशीष को प्राप्त करने के लिए स्वयं को अपनी इच्छा से नम्र कर दिया। वास्तव में, यह नम्र बनने के उसके उपदेशों के समर्थन में ही था कि पौलुस ने प्रसिद्ध “मसीह भजन” को शामिल किया जो फिलिप्पियों 2:6-11 में पाया जाता है।

179

कुछ विद्वानों ने सुझाव दिया है कि ये पद एक भजन की रचना करते हैं जो पौलुस द्वारा फिलिप्पियों की पत्री के लिखे जाने से पूर्व भी कलीसिया में पाया जाता था। अन्य संदेह करते हैं कि पौलुस ने ये पद इसी अवसर के लिए लिखे थे। परन्तु उनका स्रोत चाहे जो भी हो, इन पदों का अर्थ स्पष्ट है- यीशु नम्र या दीन है, और हमें उसी के समान बनना है।

180

यह अनुच्छेद मसीह को इतिहास के तीन चरणों के दौरान दर्शाता है- देहधारण से पूर्व की अवस्था, उसकी नम्रता और महिमा में उसका उत्थान। पहला, पौलुस ने देहधारण से पूर्व मसीह की स्थिति के बारे में बात की। उस समय मसीह पुत्र-परमेश्वर के रूप में अस्तित्व में था, और पिता एवं पवित्र आत्मा के साथ सिद्ध संयोजन में रहता था और सामर्थ एवं महिमा में उनके समान था। पौलुस ने फिलिप्पियों 2:6 में मसीह के देहधारण से पूर्व की अवस्था का वर्णन किया है जहां उसने ये शब्द लिखे :

181

(मसीह ने) परमेश्वर के स्वरूप में होते हुए भी परमेश्वर की समानता पर अपना अधिकार बनाए रखना उपयुक्त न समझा। (फिलिप्पियों 2:6)

182

यह पद हमें मसीह के बारे में कम से कम दो बातें बताता है। पहली, मनुष्य बनने से पहले मसीह महिमावान था। या जैसा कि पौलुस लिखता है, मसीह में परमेश्वर का स्वभाव था। पौलुस द्वारा प्रयोग किया गया यूनानी शब्द मोरफे है जो समान्यत: किसी के बाहरी आकार को दर्शाता है। अब, निःसंदेह, पौलुस का अर्थ केवल यह नहीं था कि मसीह परमेश्वर के समान दिखता था। बल्कि, यह कि उसकी बाहरी दिखावट इस अंतर्निहित वास्तविकता को प्रकट करती थी कि मसीह वास्तव में परमेश्वर था।

183

दूसरी, पौलुस ने दर्शाया कि मसीह नम्र था। अपनी नम्रता को दर्शाने से पूर्व ही पहले से अस्तित्व में रहने वाले पुत्र ने एक अतिरिक्त स्वभाव या रूप, अर्थात् हमारे मनुष्यत्व के रूप को लेने में अपनी इच्छा के द्वारा इसे प्रकट किया। विशेषकर, पौलुस ने लिखा कि मसीह ने परमेश्वर की समानता पर अपना अधिकार बनाए रखना उपयुक्त न समझा। यहां पौलुस ने इसोस शब्द का प्रयोग परमेश्वर के साथ मसीह की “समकक्षता” या “समानता” को दर्शाने के लिए किया। उसका अर्थ था कि मसीह का “रूप” या “बाहरी महिमा” वही महिमा थी जो पिता-परमेश्वर के द्वारा प्रदर्शित की जाती थी, परन्तु मसीह पिता को प्रसन्न करने के लिए और हमारे उद्धार को मोल लेने के लिए अपनी अधिकारपूर्ण स्वर्गीय दशा की महिमा को त्याग देने के लिए तैयार था।

184

अगला, पौलुस ने मरियम के गर्भ में मसीह के गर्भधारण से लेकर क्रूस पर उसकी मृत्यु तक उसकी नम्रता या दीनता का वर्णन किया जो उसके पृथ्वी पर बिताए गए जीवन का समय था। फिलिप्पियों 2:7-8 में मसीह की नम्रता के विषय में पौलुस के शब्दों को सुनें :

185

(मसीह ने) स्वयं को रिक्त कर दिया और एक दास का स्वरूप ग्रहण करके मनुष्य की समानता में हो गया। और जब वह मनुष्य के रूप में प्रकट हुआ, तो उसने स्वयं को नम्र किया और मृत्यु तक आज्ञाकारी रहा, यहां तक कि क्रूस की मृत्यु तक। (फिलिप्पियों 2:7-8)

186

देहधारण से पूर्व मसीह के विषय में पौलुस के शब्दों को दर्शाते हुए ये पद नम्रता की उसकी अवस्था के दौरान मसीह के विषय में कम से कम दो बातें बताते हैं। पहली, मसीह की नम्रता लज्जास्पद थी। अर्थात् परमेश्वर के पुत्र ने मनुष्य के स्वभाव या रूप को ग्रहण करने के लिए अपनी स्वर्गीय महिमा को अलग रख दिया। फिर पौलुस ने यूनानी शब्द मोरफे का इस्तेमाल यह दर्शाने के लिए किया कि मसीह ने अपने बाहरी रूप को बदल दिया, जिससे उसने स्वर्गीय महिमा को प्रदर्शित नहीं किया बल्कि मनुष्य के बाहरी रूप को प्रदर्शित किया।

187

अब जिस प्रकार मसीह के स्वर्गीय रूप ने दर्शाया था कि वह सच्चे एवं पूर्ण रूप से दैवीय था, तो उसके मानवीय रूप ने दर्शाया कि वह सच्चे एवं पूर्ण रूप से मानव था। परन्तु यह अनुभव करना भी महत्वपूर्ण है कि मनुष्य बनने में मसीह ने अपने किसी भी स्वर्गीय चरित्र को नहीं त्यागा। बल्कि उसने अपने पूर्ण दैवीय स्वभाव में पूर्ण मानवीय स्वभाव जोड़ दिया, इसीलिए उसे सही रूप में पूर्ण मानवीय और पूर्ण दैवीय कहा जाता है।

188

दूसरी, फिलिप्पियों 2:7-8 इस बात की पुष्टि करता है कि मसीह दीन था। जिस प्रकार वह देहधारण से पूर्व की अवस्था में अपने महिमामय रूप को अलग रखने के लिए तैयार था, उसी प्रकार उसने इस रूप को वास्तव में अपने दीन होने के समय के दौरान ही अलग रखा। वास्तव में, उसकी दीनता इतनी अधिक थी कि उसने साधारण प्राणियों को अपनी हत्या करने की अनुमति दे डाली जिनके आकार को उसने अपने लिए ले लिया था।

189

अंत में, पौलुस ने मसीह का वर्णन उसको महिमान्वित किए जाने के समय के दौरान किया, जो मृतकों में से उसके पुनरुत्थान और स्वर्ग में उसके स्वर्गारोहण से शुरु हुआ और अब सृष्टि पर उसके शासन के साथ जारी रहता है। पौलुस ने फिलिप्पियों 2:9-11 में इन शब्दों के साथ वर्णन करते हुए मसीह के महिमान्वित किए जाने के बारे में लिखा :

190

परमेश्वर ने भी उसे ऊँचा किया और उसको वह नाम प्रदान किया जो सब नामों में श्रेष्ठ है। ताकि स्वर्ग में, पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे यीशु के नाम में प्रत्येक घुटना झुक जाए। और पिता परमेश्वर की महिमा के लिए प्रत्येक जीभ मान ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है। (फिलिप्पियों 2:9-11)

191

पुन: पौलुस ने इस चरण के दौरान मसीह के विषय में कम से कम दो महत्वपूर्ण बातों को दर्शाया। पहली, मसीह ने ब्राह्मांड के शासक के रूप में महिमान्वित किए जाने के रूप में अपने महिमामय रूप को पुन: प्राप्त किया जिसके समक्ष हर प्राणी ने समर्पण और आराधना के साथ दण्डवत किया। दूसरी, मसीह सर्वाभौमिक सर्वोच्चता की उच्च, महिमान्वित अवस्था में भी दीन बना रहा। आखिरकार, सृष्टि पर उसके शासन का उद्देश्य भी उसकी स्वयं की महिमा नहीं परन्तु पिता को महिमा देना था।

192

अब पौलुस ने फिलिप्पियों में इस विचार को प्रस्तुत किया क्योंकि वह चाहता था कि विश्वासी मसीह के उदाहरण का अनुसरण करें। आखिरकार, यदि परमेश्वर के पुत्र ने अपनी इच्छा से ऐसी दीनता के प्रति समर्पित कर दिया तो उसके सेवकों को भी दीन बनना चाहिए। और यदि मसीह की दीनता ने कष्टों और मृत्यु में दृढ़ बने रहने में उसकी सहायता की तो दीनता दृढ़ बने रहने में हमारी सहायता भी कर सकती है। और फिलिप्पियों 2:2-4 में विशेषकर पौलुस का यही तर्क था जहां उसने ये निर्देश लिखे :

193

एकचित्त होने, एकसमान प्रेम रखने, एक जैसी भावनाएं रखने और एक ही लक्ष्य पर केन्द्रित होने के द्वारा मेरा आनन्द पूरा करो। द्वेष से और अहंभाव से कुछ न करो, परन्तु दूसरों को नम्रतापूर्वक अपने से अधिक श्रेष्ठ समझो। प्रत्येक व्यक्ति मात्र अपने हित का ही नहीं बल्कि दूसरों के हित का भी ध्यान रखे। (फिलिप्पियों 2:2-4)

194

दीनता धार्मिक जीवन और विश्वास में दृढ़ बने रहने में सहायता करती है। एक ओर यह हमें समान विचारधारा वाले बनने, एकता की रचना करने, दूसरों को प्रेम करने और उन्हें सम्मान देने और उनकी जरुरतों को पूरा करने के योग्य बनाती है। वहीं दूसरी ओर, यह हमें इस बात को स्मरण करने में सहायता करती है कि पिता हमारे विश्वास और वफादारी के योग्य है, तब भी जब हमारी परिस्थितियां दयनीय होती हैं, तब भी जब हम सताए जाते हैं, तब भी जब हम शहीद हो जाते हैं।

195

आशावाद

दृढ़ता के माध्यम के रूप में विश्वासियों में दीनता को उत्साहित करने के अतिरिक्त पौलुस ने आशावाद, अर्थात् जीवन में सकारात्मक और आशापूर्ण दृष्टिकोण, के महत्व पर बल दिया। आधुनिक जगत में लोगों द्वारा आशावाद को मूर्खतापूर्ण प्रयास के रूप में समझना कोई असामान्य बात नहीं है, अर्थात् ऐसा प्रयास जो वास्तविक संसार के अनुरूप नहीं है परन्तु केवल यह दिखावा करता है कि बातें वास्तविकता से बेहतर हैं। परन्तु पौलुस का आशावाद ऐसा नहीं था। उसका आशावाद यथार्थपूर्ण था। उसने जिन्दगी में बुरी बातों का तिरस्कार नहीं किया- वास्तव में, उसने उनके द्वारा खतरा महसूस किया। वस्तुत: पौलुस का आशावाद अच्छी बातों पर ध्यान देने का विवेकपूर्ण निर्णय था न कि बुरी बातों पर । यह परमेश्वर की उपलब्धता और वर्तमान जगत में आशीषों से एवं भविष्य में परमेश्वर द्वारा प्रदान किए जाने वाले छुटकारे और पुरस्कारों की आशा से उत्पन्न हुआ था।

196

उदाहरण के तौर पर, कारागृह में उसके कष्टों के दौरान जब वह सुसमाचार के पाखण्डी प्रचारकों द्वारा मुश्किलों को सह रहा था तो उसने उन आशीषों पर ध्यान देने का चुनाव किया कि चाहे प्रचारकों के उद्देश्य बुरे थे, फिर भी मसीह का प्रचार हो रहा था। फिलिप्पियों 1:17 और 18 में उसके वर्णन को सुनें :

197

परन्तु अन्य मसीह का प्रचार सच्चाई से नहीं परन्तु द्वेषभाव से इसलिए करते हैं कि कैद में मेरे कष्ट और भी बढ़ा दें। तो क्या हुआ? चाहे दिखावे से या सच्चाई से, हर प्रकार से मसीह का प्रचार तो हो ही रहा है, और इससे मैं आनन्दित हूँ। (फिलिप्पियों 1:17-18)

198

पौलुस की भावनात्मक अवस्था जटिल थी। एक ओर तो वह कष्ट सह रहा था। परन्तु दूसरी ओर उसने बुरी बातों की अपेक्षा अच्छी बातों पर ध्यान लगाने का विवेकपूर्ण निर्णय लिया। और इस विकल्प ने उसे कारागृह के कष्टों को झेलने और इन प्रचारकों के हाथों से दुर्व्यवहार को भी झेलने में सहायता की। और फिलिप्पियों 4:6-8 में कलीसिया को पौलुस की सलाह उसके व्यवहार के अनुरूप थी। वहां उसके शब्दों पर ध्यान दें :

199

किसी बात की चिन्ता न करो, परन्तु प्रत्येक बात में प्रार्थना और निवेदन के द्वारा धन्यवाद के साथ तुम्हारी विनतियां परमेश्वर के समक्ष प्रस्तुत की जाएं। तब परमेश्वर की शान्ति जो संपूर्ण समझ से परे है, मसीह यीशु में तुम्हारे हृदयों और विचारों की रक्षा करेगी। अन्तत: हे भाइयो, जो बातें सत्य हैं, जो आदरणीय हैं, जो न्यायसंगत हैं, जो निर्मल हैं, जो प्रिय हैं, जो प्रशंसनीय हैं और यदि कोई सद्गुण या प्रशंसायोग्य गुण हैं, तो उन पर ध्यान दिया करो। (फिलिप्पियों 4:6-8)

200

आशावादी रूप में सोचना और चिंता एवं हताशा के विरुद्ध लड़ना हमारे हृदयों और मनों की रक्षा के लिए परमेश्वर को पुकारने का एक साधन है। और इसलिए यह दृढ़ बने रहने का भी एक साधन है।

201

आनन्द

अंत में, नम्रता और आशावाद के अतिरिक्त पौलुस ने यह भी सिखाया कि आनन्द की विचारधारा मसीही दृढ़ता एक बहुत बड़ी सहायता है। एक बात तो यह है कि स्वयं पौलुस ने तनावपूर्ण परिस्थितियों में दृढ़ बने रहने के लिए आनन्द को प्राप्त करने पर ध्यान दिया। और अपने उदाहरण के द्वारा उसने फिलिप्पी के विश्वासियों को भी ऐसा ही करने को उत्साहित किया। उदाहरण के तौर पर फिलिप्पियों 1:18 से 20 में पौलुस ने इस प्रकार से आनन्द के विषय में कहा :

202

मैं... आनन्दित रहूँगा भी, क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारी प्रार्थनाओं और प्रभु यीशु मसीह के पवित्र आत्मा की सहायता से इसका परिणाम मेरी स्वतंत्रता ही होगा। मेरी सच्ची अभिलाषा और आशा यही है कि मैं किसी बात में लज्जित न होऊँ, बल्कि सदैव की भाँति मसीह की महिमा चाहे मेरे जीवन के द्वारा या मृत्यु के द्वारा अब भी मेरी देह से होती रहे। (फिलिप्पियों 1:18-20)

203

पौलुस का डर उचित था कि शायद उसे मार डाला जाएगा। और फिर भी, अपनी मृत्यु के नकारात्मक पहलुओं पर ध्यान लगाने की अपेक्षा उसने अपनी मृत्यु के सकारात्मक परिणाम पर ध्यान लगाया; वह आशावादी था। और फलस्वरूप वह आनन्दित हो सका।

204

ध्यान दें कि इस विषय में पौलुस का आनन्द पीड़ा और कष्ट का अपरिपक्व इनकार नहीं था, और न ही प्रसन्नता का अत्याधिक मनोभाव था। इसके विपरीत, जैसा हम देख चुके हैं, पौलुस की भावनाओं में काफी उदासी और कष्ट भी मिले हुए थे। परन्तु अपनी परेशानियों के बावजूद पौलुस वास्तव में जीवन की अच्छी बातों की ओर देख सका और उन पर आनन्दित हो सका। वह साहसी मृत्यु के द्वारा मसीह को सम्मान देने के बारे में सोचकर संतुष्ट हो सका, और मसीह के महिमान्वित होने पर प्रसन्न हो सका। और उस संतुष्टि एवं प्रसन्नता ने आनन्द की रचना की। पौलुस ने केवल आनन्द को ही महसूस नहीं किया, बल्कि उसने सच्चे आनन्द को महसूस किया। और इस आनन्द ने उसे आगे बढ़ने और अपने कष्टों को उद्देश्य प्रदान करने की चाहत दी।

205

पौलुस ने फिलिप्पी में अपने मित्रों को ऐसे ही व्यवहार को प्राप्त करने के लिए उत्साहित किया ताकि उनका आनन्द उन्हें दृढ़ बनने में उनकी सहायता करे। फिलिप्पियों 4:4-6 में उन्हें दी गई उसकी सलाह को सुनें :

206

प्रभु में सदैव आनन्दित रहो; मैं पुन: कहता हूँ कि आनन्दित रहो... प्रभु निकट है। किसी बात की चिन्ता न करो। (फिलिप्पियों 4:4-6)

207

पौलुस ने फिलिप्पियों को आनन्दित होने के लिए उत्साहित किया क्योंकि प्रभु निकट था, चाहे आवश्यकता के समय उनकी सहायता के रूप में, या फिर उस राजा के रूप में जो संपूर्ण पृथ्वी पर अपने राज्य को लाने के लिए पुन: लौटेगा। कैसा भी विषय हो, आनन्द फिलिप्पियों को चिंता को दूर करने के लिए प्रेरित करेगा और योग्य बनाएगा। और इसलिए, यह प्रभु के आगमन तक दृढ़ बने रहने में उनकी सहायता करेगा।

208

पौलुस की विचारधारा के समान अपनी विचारधारा बनाने, एवं नम्रता और आशा और आनन्द पर केन्द्रित रहने के द्वारा हम चिंता और निराशा के विरुद्ध स्वयं को सामर्थी बना सकते हैं। कठिनाइयां अवश्य आएंगी, और हम कष्ट सहेंगे, कभी-कभी तो बहुत अधिक। इसलिए जब ऐसा होगा तो हमें पौलुस के उदाहरण और उसकी सलाह को याद रखना जरुरी है। हमें नम्र आत्मा के साथ अपने कष्टों को सहने, और वर्तमान एवं आने वाले जीवन की अनेक भली बातों के बारे में सोचकर आशापूर्ण बने रहने की आवश्यकता है। और हमें अपने जीवन में आनन्द देने वाली बातों पर आनन्दित होने का विवेकपूर्ण निर्णय लेने के द्वारा अपनी परिस्थितियों की विपत्तियों पर विजय प्राप्त करनी है। इन रूपों में परमेश्वर की सहायता से हम दृढ़ बने रहने के लिए सामर्थ प्राप्त कर सकते हैं।

209

दृढ़ता की सेवकाई

अब जब हमने दृढ़ता की प्रकृति और विचारधारा की जांच कर ली है, तो हम अपने तीसरे शीर्षक की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं- एक दूसरे के प्रति हमारे कार्यों के माध्यम से व्यक्त कलीसिया की दृढ़ता की सेवकाई।

210

पौलुस ने पहचान लिया था कि उसके प्रति फिलिप्पियों की सेवकाई ने उसकी अपनी सेवकाई के कई चरणों में दृढ़ बने रहने में उसकी सहायता की थी, उसके वर्तमान कारावास में भी। कई बार उन्होंने आर्थिक और भावनात्मक रूप में उसकी सहायता की थी। और उन्होंने कारागृह में उसकी सेवा करने के लिए इपफ्रुदीतुस को भी भेजा था। हम पौलुस के प्रति उनकी सेवकाई को आर्थिक सहायता, उत्साहवर्द्धन और भौतिक उपस्थिति के रूप में सारगर्भित कर सकते हैं। इन सब रूपों में फिलिप्पियों ने पौलुस के प्रयत्नों को सहारा दिया एवं अधिक दृढ़ता प्राप्त करने के लिए सामर्थ दी।

211

उदाहरण के लिए फिलिप्पियों 4:13 और 14 में पौलुस के भावविभोर शब्दों को सुनें :

212

मैं उसके द्वारा जो मुझे सामर्थ प्रदान करता है, सब कुछ कर सकता हूँ। फिर भी मेरी विपत्ति में मेरा साथ देकर तुमने अच्छा कार्य किया है। (फिलिप्पियों 4:13-14)

213

कुछ रूपों में, ये साधारण पद पौलुस के प्रति फिलिप्पियों की सेवकाई और उनके प्रति उसकी भावनाओं के केन्द्र को प्रस्तुत करते हैं।

214

पौलुस के पास फिलिप्पियों की भेंट लेकर इपफ्रुदीतुस के आने से पहले प्रेरित दृढ़ बने रहने के लिए प्रभु से सामर्थ को प्राप्त कर रहा था। परन्तु उसको दूसरों से नैतिक सहायता प्राप्त नहीं थी, और फलस्वरूप उसकी आशा और उसका आनन्द कमजोर पड़ गया था। वह दृढ़ बना हुआ था, परन्तु वह एक कठिन कार्य था। परन्तु फिलिप्पियों की भेंट ने आर्थिक सहायता प्रदान की जिसने उसके कष्टों को कम कर दिया, जिससे दृढ़ बने रहना कुछ आसान हो गया था। और भेंट एवं इपफ्रुदीतुस को भेजने के माध्यम से व्यक्त पौलुस के लिए उनकी परवाह ने उसे उत्साह प्रदान किया एवं उसकी आशा और आनन्द को पुन: प्राप्त करने में सहायता की। और निसंदेह इपफ्रुदीतुस की भौतिक उपस्थिति ने न केवल पौलुस की भौतिक जरुरतों की पूर्ति की, बल्कि और भी अधिक दृढ़ बनने के लिए उसे संगति और मित्रता भी प्रदान की।

215

और इसलिए पौलुस ने हृदय की गहराई से धन्यवाद देते हुए फिलिप्पियों से कहा कि तुम्हारे द्वारा मेरी विपत्तियों में सहभागी होना अच्छा था। पौलुस ने वास्तव में और सच्चाई से उनकी सेवकाई की सराहना की। और इसने उन्हें अपने मित्रों के रूप में मानने में राहत और आनन्द प्रदान किया, जिससे उसने अपने विश्वास को मजबूत रखने और मसीह को सम्मान देने के मार्गों में जीने के द्वारा दृढ़ बने रहने के लिए उत्साह और सहायता प्राप्त की।

216

और पौलुस ने भी अपनी सेवकाई का उद्देश्य फिलिप्पियों को उनके अपने कष्टों में दृढ़ बने रहने के लिए सहायता करना रखा था। जैसा हम फिलिप्पियों 1:3 और 4 में पढ़ते हैं, उसने उनके लिए प्रार्थना की। उसने उन्हें यह सिखाने के लिए पत्री लिखी कि किस प्रकार दृढ़ बना जाता है। और इससे बढ़कर, उसने इपफ्रुदीतुस को उनके प्रति सेवकाई करने के लिए भेजा, शायद कलीसिया के अगुवे के रूप में।

217

आधुनिक कलीसिया में हम फिलिप्पियों द्वारा पौलुस की भौतिक सहायता से बहुत कुछ सीख सकते हैं। पूरे संसार में ऐसे अनेक मसीही हैं जो भौतिक रूप से जरुरतमंद हैं। कुछ इतने गरीब हैं कि खाना और कपड़ा भी उनके लिए एक निरन्तर चुनौती बनी रहती है। अन्य लोगों पर संसार के दुष्ट लोगों द्वारा अत्याचार किया जाता है। कुछ को गुलामी में बेच दिया जाता है और उनसे दुर्व्यवहार किया जाता है। और निसंदेह संसार के हर कोने में मसीहियों द्वारा अनुभव की जाने वाली अन्य वास्तविक आवश्यकताएं भी हैं। और इन विश्वासियों के प्रति सेवकाई करने का एक तरीका, उनको आशा देने और दृढ़ बने रहने में उनकी सहायता करने का एक मार्ग, उनकी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करना था।

218

अपने प्रेम और उत्साहवर्द्धन के माध्यम से पौलुस के प्रति फिलिप्पियों की सेवकाई से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। उन्होंने पौलुस को केवल धन ही नहीं भेजा था; उन्होंने अपना प्यार भी भेजा था। इपफ्रुदीतुस के माध्यम से उन्होंने पौलुस के समक्ष प्रकट किया कि वे उसके बारे में सोच रहे थे, और कि जिस प्रकार वे उसके हृदय में बसे थे उसी प्रकार वह भी उनके हृदय में बसा था।

219

आधुनिक मसीहियों को भी दृढ़ बने रहने के लिए उत्साह की आवश्यकता है। हम कलीसिया में, या टेलीफोन पर, या पत्र या संदेशवाहक, या कई रूपों में उत्साह के शब्दों को कह सकते हैं। परन्तु तर्क यह है कि हमें लोगों को यह बताने के लिए कि हम उनसे प्रेम करते हैं और कि वे भुलाए नहीं गए हैं, कदम आगे बढ़ाना है।

220

और इससे बढ़कर, हम लोगों के साथ बैठकर, उनके साथ रहकर, उनकी भौतिक आवश्यकताओं में उनकी सहायता करके उनके साथ समय व्यतीत कर सकते हैं, उसी प्रकार जिस प्रकार फिलिप्पियों ने इपफ्रुदीतुस को पौलुस के पास भेजा था। कलीसिया में भी अनेक लोग अकेले हैं, कइयों को मित्र की आवश्यकता है। और कई अन्यों को आम बातों जैसे खरीददारी करने, सफाई करने, या उनकी एवं उनके परिवारों की देखभाल करने में सहायता की आवश्यकता होती है। विश्वासियों के साथ व्यक्तिगत उपस्थिति भी दृढ़ बने रहने में सहायता करने का अच्छा तरीका है।

221

और हम पौलुस द्वारा फिलिप्पियों के प्रति की गई सेवकाई से भी बहुत कुछ सीख सकते हैं। हम उन्हें सीखा सकते हैं कि ठोस धर्मशिक्षा और व्यावहारिक सलाह से किस प्रकार दृढ़ बने रहा जा सकता है। यदि हम कलीसिया में अधिकार के स्तरों पर हैं तो हम कलीसिया की उन मार्गों में अगुवाई कर सकते हैं जो उत्साहवर्द्धक और उत्तरदायित्वपूर्ण हों, जो शब्दों और उदाहरण के द्वारा दर्शाता हो कि दृढ़ता भक्तिपूर्ण और संभव है। और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम चाहे जो भी हैं और जहां भी हैं, हम हमेशा प्रार्थना कर सकते हैं जिससे स्वयं परमेश्वर हमारी विनती के प्रत्युत्तर में अन्य विश्वासियों को दृढ़ बनने के लिए सामर्थ प्रदान करेगा।

222

उपसंहार

इस अध्याय में हमने पवित्रशास्त्र में पाई जाने वाली पौलुस द्वारा फिलिप्पियों को लिखित पत्री की जांच की है, इसमें हमने उसकी पृष्ठभूमि जो पत्री के ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भ की रचना करती है, पत्री की संरचना और विषयवस्तु और अंत में मसीही कलीसिया के जीवन में इस पत्री के आधुनिक प्रयोग के बारे में भी चर्चा की है।

223

फिलिप्पियों को लिखी पौलुस की पत्री में कष्टपूर्ण एवं तनावपूर्ण समय में भी अपने विश्वास में स्थिर रहने के विषय में, अपने पवित्र परमेश्वर के सामने धार्मिक रूप से जीवन जीने के विषय में हमें सिखाने के लिए अनेक गहन और अद्भुत सत्य पाए जाते हैं। जब हम स्वयं को पौलुस की शिक्षाओं के प्रति समर्पित करते हैं तो हम महसूस करेंगे कि दृढ़ता कितनी महत्वपूर्ण है, और हम इस विस्मयकारी कार्य के प्रति समर्पित होने के लिए अति उत्साहित होंगे। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जब हम पौलुस की सलाह का अनुसरण करने के द्वारा हमारी अपनी दृढ़ता में सफल होते हैं, और दृढ़ बने रहने में दूसरों की भी सहायता करते हैं, तो हम अपने महिमामय प्रभु यीशु मसीह को महिमा और सम्मान प्रदान करेंगे।

224